ADDITIONAL® PRACTICE

# हिंदी 10

## कोर्स-'ए'

mRrjekyk

DNA education
New Delhi-110002

## क्षितिजः भाग 2– गद्‍य खंड

### पाठ–1. नेताजी का चश्मा

**अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

**गद्‍यांश - 1**

**उत्तर** (i) अधिकारियों ने स्थानीय कलाकार से ही मूर्ती बनवाने का निर्णय लिया क्योंकि बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने को थी और उनका बजट भी ज़्यादा नहीं था।

**उत्तर** (ii) लेखक ने कार्यालयी प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि सरकारी विभाग में कार्य कछुए की गति से होते हैं। सरकारी कर्मचारी समय पर काम करना ही नहीं चाहते।

**उत्तर** (iii) मोतीलाल स्थानीय कलाकार थे। वह एक महीने में मूर्ति बनाने का भरोसा दिला रहे थे।

**गद्‍यांश - 2**

**उत्तर** (i) मूर्तिकार ने नेताजी की जो मूर्ति बनाई थी, उसमें वह सुंदर, मासूम और कमसिन लग रहे थे। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह प्रयास सराहनीय था।

**उत्तर** (ii) नेताजी की आँखों पर संगमरमर का चश्मा नहीं था। मूर्ति पर एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम पहना दिया गया था।

**उत्तर** (iii) मूर्ति पर असली चश्मा देखकर हालदार साहब के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

**गद्‍यांश - 3**

**उत्तर** (i) कैप्टन को नेताजी की मूर्ति बगैर चश्मे के अच्छी नहीं लगती थी। इसलिए वह मूर्ति पर अपनी छोटी–सी दुकान में उपलब्ध गिने–चुने चश्मों में से कोई एक फिट कर देता था।

**उत्तर** (ii) जब किसी ग्राहक को वैसे ही फ्रेम की ज़रूरत होती थी जो नेताजी की मूर्ति पर होता था, तो कैप्टन उसे ग्राहक को देकर नेताजी की मूर्ति पर दूसरा लगा देता था। इस प्रकार वह बार–बार मूर्ति का चश्मा बदल दिया करता था।

**उत्तर** (iii) कैप्टन के चरित्र से हमें देशभक्ति की प्रेरणा मिलती है।

**गद्‍यांश - 4**

**उत्तर** (i) हालदार साहब को हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में कस्बे से गुज़रना पड़ता था।

**उत्तर** (ii) नगरपालिका ने सड़क पक्की करवा दी थी, पेशाबघर बनवा दिए थे, कबूतरों की छतरी बनवा दी थी, कभी–कभी नगरपालिका द्‍वारा कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया जाता था।

**उत्तर** (iii) कस्बे की स्थिती बेहतर नहीं थी। जिन्हें पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान थे। हलदार साहब हर पंद्रह दिन बाद उस कस्बे से गुजरते थे।

**गद्‍यांश - 5**

**उत्तर** (i) हालदार साहब ने देखा कि मूर्ति पर अब दूसरा चश्मा था। पहले मूर्ति पर मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा था।

**उत्तर** (ii) हालदार साहब को चौराहे पर रुकने, पान खाने और मूर्ति को देखने की आदत पड़ गई थी। कौतूहल दुर्दमनीय होने पर उन्होंने पानवाले से पूछा कि नेताजी का चश्मा हर बार कैसे बदल जाता है?

**उत्तर** (iii) हलदार साहब का प्रश्न सुनकर पानवाले ने आँखों–ही–आँखों में हँसकर अपनी प्रतिक्रिया दी।

**गद्‍यांश - 6**

**उत्तर** (i) मूर्तिकार (मास्टर) चश्मा बनाना भूल गया था। शायद वह पारदर्शी चश्मा बना नहीं पाया होगा।

**उत्तर** (ii) मास्टर मोतीलाल एक स्थानीय मूर्तिकार था। उसे बहुत ज़्यादा अभ्यास नहीं होगा। इसलिए वह चश्मा बना नहीं पाया होगा।

**उत्तर** (iii) मोतीलाल स्थानीय कलाकार था। उसे 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल कहकर' संबोधित किया जाता था।

**गद्यांश - 7**

**उत्तर** (i) पानवाले ने चश्मे वाले का मज़ाक उड़ाते हुए कहा– 'नहीं साहब! वह लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में? पागल है! पागल।'

**उत्तर** (ii) कैप्टन मरियल-सा लँगड़ा आदमी था, जो फेरी लगाकर चश्मे बेचा करता था। बेचारे की अपनी कोई दुकान भी नहीं थी।

**उत्तर** (iii) हलदार साहब पूछना चाहते थे कि कैप्टन को सब कैप्टन क्यों कहते थे?

**गद्यांश - 8**

**उत्तर** (i) हलदार साहब को कौतुक और प्रफुल्लता के क्षण कस्बे के चौराहे पर नेताजी की मूर्ति पर अलग-अलग प्रकार के चश्मे देखकर प्राप्त होते थे।

**उत्तर** (ii) उन्होंने देखा कि मूर्ति पर कोई भी कैसा भी चश्मा नहीं था। उन्होंने पानवाले से पूछा 'क्यों भई, क्या बात है? आज तुम्हारे नेताजी की आँखों पर चश्मा क्यों नहीं है?'

**उत्तर** (iii) पानवाले की आँखों में आँसू आ गए और उसने बताया कि कैप्टन मर गया।

**गद्यांश - 9**

**उत्तर** (i) कस्बे में घुसने से पहले हालदार साहब को ख्याल आया कि नेताजी की मूर्ति पर चश्मा नहीं लगा होगा क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया है और कैप्टन मर चुका है।

**उत्तर** (ii) चौराहा आते ही हालदार साहब जीप रूकवाकर तेज़-तेज़ कदमों में मूर्ति की ओर बढ़े और उसके सामने अटेंशन की मुद्रा में खड़े हो गए।

**उत्तर** (iii) नेता जी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा रखा हुआ था। जिसे देखकर उनकी आँखें भर आईं।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** नगरपालिका द्वारा नेताजी सुभाषचंद्र की मूर्ति को कस्बे के चौराहे पर लगवाने का निर्णय लिया गया।

**उत्तर 2.** हालदार साहब जब चौराहे से गुजरे तो नेताजी की मूर्ति देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ क्योंकि मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगा हुआ था। सरकंडे का चश्मा देखकर हालदार साहब के मन में यह आशा जगी कि बच्चे एक बेहतर कल का निर्माण करेंगे और अब उन्हें कभी भी चौराहे पर नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति नहीं देखनी पड़ेगी।

**उत्तर 3.** हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। पानवाले ने उसकी देशभक्ति और भावना का ख्याल न करके उसे पागल और लँगड़ा कहा। नेताजी जैसे देशभक्त के लिए उसके मन में सम्मान की भावना थी।

**उत्तर 4.** उस कस्बे के चौराहे पर नेता जी (सुभाषचंद्र बोस) की मूर्ति लगी हुई थी। उस मूर्ति में नेताजी बहुत सुंदर और जवान लग रहे थे।

**उत्तर 5.** कैप्टन की देशभक्ति की भावना देखकर तथा नेताजी के प्रति समर्पण भावना को देखकर लोग उसे कैप्टन कहते होंगे। हो सकता है कि वास्तव में उसका नाम ही कैप्टन हो।

**उत्तर 6.** कैप्टन मूर्ति की कमी को पूरा करता था। वह नित्य नया चश्मा नेताजी की मूर्ति को पहना दिया करता था।

**उत्तर 7.** कैप्टन शब्द सुनते ही मन में छवि उभरती है- एक लंबे, तगड़े, बलिष्ठ युवक की परंतु वास्तव में कैप्टन एक मरियल-सा तथा अपाहिज व्यक्ति था।

**उत्तर 8.** पानवाला मोटा, काला और खुशमिजाज़ व्यक्ति था। उसे पान खाने की लत थी। वह जब हँसता था तब उसकी तोंद भी उसका साथ दिया करती थी।

**उत्तर 9.** प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने देशभक्ति का संदेश दिया है। हम अपने छोटे-छोटे कार्यों से देश के प्रति निष्ठा दिखा सकते हैं तथा देशभक्ति का परिचय दे सकते हैं।

**उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न**

**उत्तर 1.** (1) शिक्षा का प्रचार-प्रसार करके।

(2) अच्छे नागरिक बनकर।

(3) प्राकृतिक आपदाओं के समय सबकी मदद करके।

(4) सैनिकों के परिवारों की मदद करके।

**उत्तर 2.** हालदार साहब एक सच्चे देशभक्त थे। उनमें देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी थी। जब उन्हें पता चला था कि कैप्टन मर गया है तो वह इस बात से दुखी थे कि अब नेताजी की मूर्ति पर चश्मा कौन पहनाएगा?

**उत्तर 3.** उनके मन-मस्तिष्क में कैप्टन का यह चित्र उभरा होगा कि अवश्य ही कैप्टन लंबा-चौड़ा और बलिष्ठ युवक होगा अथवा वह 'आज़ाद हिंद फ़ौज' का सिपाही रहा होगा, जो नेताजी के व्यक्तित्व व देशभक्ति से अत्यंत प्रभावित रहा होगा।

**उत्तर 4.** नेताजी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने देश को आज़ाद कराने के लिए अनेक प्रयास किए। उन्होंने 'आज़ाद हिंद फ़ौज' बनाई। युवा पीढ़ी उनके द्वारा किए गए महान कार्यों तथा उनके व्यक्तित्व से प्रेरित हो सके इसलिए नेताजी की मूर्ति लगवाई गई होगी।

**उत्तर 5.** विद्यार्थी स्वयं करें।

## पाठ–2. बालगोबिन भगत

**अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

**गद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) बालगोबिन भगत मँझले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। उनकी आयु साठ वर्ष से ऊपर थी। वे लंबी दाढ़ी या लंबी जटाएँ नहीं रखते थे परंतु उनका चेहरा हमेशा सफ़ेद बालों से जगमग किए रहता था।

**उत्तर** (ii) वह बहुत कम वस्त्र पहनते थे। कमर में एक लंगोटी। सिर पर कबीरपंथियों की भाँति कनफटी टोपी पहनते थे। जब जाड़ा आता था तो एक काली कंबली ऊपर से ओढ़ लेते थे।

**उत्तर** (iii) बालगोबिन का बेटा और बहु थे। उनकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी।

**गद्यांश - 2**

**उत्तर** (i) बालगोबिन भगत गृहस्थ होते हुए भी साधु-सा जीवन व्यतीत करते थे। वह कभी झूठ नहीं बोलते थे। वह सबके साथ खरा व्यवहार करते थे। दो-टूक बात करने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता था।

**उत्तर** (ii) वह कबीर को अपना 'साहब' मानते थे। उनके दिखाए मार्ग पर चलते थे। उनके खेत में जो भी पैदावार होती थी उसे कबीर-मठ में अर्पित कर देते थे और प्रसाद रूप में उन्हें जो मिलता था उसी से अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे।

**उत्तर** (iii) वह कभी भी शौच के लिए दूसरे के खेत में नहीं जाते थे।

**गद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) बालगोबिन भगत के ऊपर संगीत का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता था। हलवाहों के पैर ताल में उठने लगते थे। औरतें गुनगुनाने लगती थीं, रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ अज़ीब क्रम से चलने लगती थीं – इस प्रकार उनके संगीत का जादू सबके सिर चढ़ जाता था।

**उत्तर** (ii) आषाढ़ मास में जब लोग अपने खेतों में परिश्रम से धान की रोपाई कर रहे होते थे, ऐसे समय में लोगों के कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठती थी।

**उत्तर** (iii) बालगोबिन भगत पूरे शरीर पर कीचड़ के लिथड़े मलकर खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को खेतों में बिठा रही है।

**गद्यांश - 4**

**उत्तर** (i) भादो की अँधेरी अधरतिया में जब सारा संसार सोया हुआ था, उस परिस्थिति में भी उनका संगीत सुनने को मिल जाता था। उनके द्वारा खंजड़ी बजाई जाती थी।

**उत्तर** (ii) भादो की आधी रात में भी बालगोबिन भगत का संगीत जागता रहता था और निस्तब्धता में सोए लोगों को अकस्मात् चौंका देता था।

**उत्तर** (iii) भगत जी कबीर के गीत गाते थे। उनके गीत सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उनके गीत का मनमोहक प्रभाव संपूर्ण वातावरण में छा जाता था।

**गद्यांश - 5**

**उत्तर** (i) कार्तिक मास में वह गाँव से दो मील दूर स्नान के लिए नदी के पास जाया करते थे। वहाँ से लौटने के पश्चात् पोखरे के ऊँचे भिंडे पर बैठकर खंजड़ी बजाते थे और भजन गाने लगते थे।

**उत्तर** (ii) लेखक ने उसे रहस्यमय इसलिए कहा है क्योंकि चारों ओर कुहासा छाया रहता था और पूरा वातावरण अजीब रहस्य से आवृत मालूम पड़ता था। कहीं तारे थे तो कहीं पूरब की लोही तो कहीं शुक्रतारे की लालिमा।

**उत्तर** (iii) जाड़े से लेखक कँपकँपा रहा था और बालगोबिन भगत के मस्तक पर श्रमबिंदु जब-तब चमक पड़ते थे।

**गद्यांश - 6**

**उत्तर** (i) भगत द्वारा की गई संध्या में उनके सभी प्रेमी जुट जाते थे। खंजड़ियों और करतालों की ध्वनि और मीठे स्वर में गाए गए भजन उमस भरी शाम को शीतल कर देते थे।

**उत्तर** (ii) भगत तथा उनकी मंडली द्वारा गाए मधुर भजन श्रोताओं और प्रेमियों को इतना प्रभावित करते थे कि वे अपने वश में नहीं रहते थे और नृत्य करने लगते थे।

**उत्तर** (iii) गर्मियों की उमस भरी संध्या में भगत द्वारा की गई संध्या से सारा आंगन नृत्य और संगीत से ओत-प्रोत हो जाता था।

**गद्यांश - 7**

**उत्तर** (i) बालगोबिन भगत का इकलौता बेटा कुछ सुस्त और बोदा-सा था। इसलिए उनका मानना था कि ऐसे लोगों को अधिक प्यार और देखभाल की आवश्यकता होती है।

**उत्तर** (ii) भगत जी की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष तब देखा गया जब उनके बेटे की मृत्यु हो गई परंतु वे अपने भजन गाने में ही मग्न थे। वह बीच बीच में अपनी बहु को भी ढांढस बंधा रहे थे।

**उत्तर** (iii) बेटे की मत्यु पर भगत अपनी पतोहू को विलाप करने की जगह उत्सव मनाने को कहते हैं। भगत ऐसा इसलिए कह रहे थे क्योंकि उनका मानना था कि मृत्यु, खुशी का अवसर है। इस समय आत्मा और परमात्मा का मिलन हो जाता है।

**गद्यांश - 8**

**उत्तर** (i) निम्नलिखित आधारों पर सिद्ध किया जा सकता है कि भगत सामाजिक परंपराओं को तोड़ने का साहस रखते थे–

(1) बेटे को मुखाग्नि अपनी बहू से दिलवाना।

(2) बहू के भाई को बहू की दूसरी शादी कराने का आदेश देना।

**उत्तर** (ii) भगत ने पतोहू के भाई को बुलाकर आदेश दिया कि उसका पुनर्विवाह कर दिया जाए ताकि वह अपनी ज़िंदगी सुख-चैन से जी सके।

**उत्तर** (iii) वह बूढ़े होने के साथ अशक्त भी हो गए थे।

**गद्यांश - 9**

**उत्तर** (i) बुखार आने पर भी उन्होंने अपना नेम-व्रत नहीं तोड़ा। वह बिना आराम किए दिनचर्या के सभी काम करते थे। फलस्वरूप वह दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होते चले गए और यही उनकी मृत्यु का कारण बना।

**उत्तर** (ii) जब वह गंगा स्नान के लिए जाते थे तो घर से खाकर चलते थे और घर पर लौटकर ही खाते थे। लंबे उपवास और शारीरिक रूप से सशक्त न होने के कारण वह बीमार पड़ गए।

**उत्तर** (iii) जब भोर में लोगों ने भगत का गीत-संगीत नहीं सुना तो उन्हें पता लग गया कि भगत अब नहीं रहे।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** बालगोबिन भगत के पुत्र की मृत्यु के पश्चात भगत ने पतोहू को पुनर्विवाह की अनुमति दे दी। उन्होंने पतोहू के भाई को बुलाकर उसकी दूसरी शादी कराने का आदेश दिया।

**उत्तर 2.** भगत की पतोहू उनके बुढ़ापे का ध्यान रखकर उन्हें छोड़कर नहीं जाना चाहती थी, पर भगत ने कहा कि यदि तू न गई तो मैं घर छोड़कर चला जाऊँगा। इस दलील के आगे उसकी एक न चली।

**उत्तर 3.** भगत जी पतोहू को रोने के बदले उत्सव मनाने को इसलिए कह रहे थे, क्योंकि वे मृत्यु को आत्मा-परमात्मा का मिलन मानते थे।

**उत्तर 4.** बालगोबिन भगत का अपना घर-परिवार था। पेशे से वह एक किसान के थे। गृहस्थ होते हुए भी लेखक ने उन्हें साधु माना है क्योंकि वह साधु की सभी परिभाषाओं पर खरे उतरते थे। वे सबके साथ दो टूक व्यवहार करते थे।

**उत्तर 5.** भगत कबीर के अनन्य उपासक थे। वह कबीर के आदर्शों पर चलते थे। खेत में पैदा हुई सारी फ़सल को 'कबीर मठ' में अर्पित कर देते थे तथा प्रसाद स्वरूप जो मिलता था उससे अपना तथा परिवार का भरण-पोषण करते थे।

**उत्तर 6.** लेखक ने बालगोबिन भगत के संगीत को जादू इसलिए कहा है क्योंकि उनके संगीत का प्रभाव सबके सिर पर चढ़कर बोलता था। सब उनके संगीत को सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे।

**उत्तर 7.** कार्तिक मास-फागुन मास तक भगत प्रभातियाँ गाया करते थे। वह किटकिटाती ठंड में गाँव के पोखरे के भिंडे पर बैठ जाते थे और लगातार गाते-बजाते चले जाते थे। वह गाते-गाते इतने सुस्वर में आ जाते थे कि इतनी ठंड में भी उनके मस्तक पर श्रम बिंदु चमक उठते थे।

**उत्तर 8.** भगत मँझोले कद के गोरे-चिट्टे व्यक्ति थे। उनकी आयु लगभग साठ वर्ष की थी। उनका चेहरा सदैव सफ़ेद बालों से जगमग किए रहता था। वह कबीर पंथियों की भाँति कनफटी टोपी पहनते थे। कमर में लंगोटी। सर्दी आने पर काली कमली ओढ़ लेते थे।

**उत्तर 9.** धान की रोपाई के समय बालगोबिन भगत का संगीत सबको चमत्कृत कर देता था। उनके कंठ से निकला एक-एक शब्द सुनने वालों के हृद्य पर अमिट छाप छोड़ता था। किसानों के पैर ताल से उठने लगते थे, रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ अजीब क्रम से चलने लगती थीं।

**उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न**

**उत्तर 1.** निम्नलिखित विशेषताओं के कारण बालगोबिन भगत साधु कहलाते थे–

(1) वह सबके साथ खरा व्यवहार करते थे।

(2) साधु की सभी परिभाषाओं पर वे खरा उतरते थे।

(3) किसी की चीज़ बिना पूछे प्रयोग में नहीं लाते थे।

(4) वह कभी झूठ नहीं बोलते थे।

**उत्तर 2.** बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा निम्नलिखित रूपों में प्रकट हुई है–

(1) वह कबीर को अपना 'साहब' मानते थे।

(2) वे उनके आदर्शों पर चलते थे।

(3) वे उनके पद गाया करते थे।

(4) वे खेत में पैदा हुई पैदावार को 'कबीर मठ' में अर्पित कर देते थे।

**उत्तर 3.** ग्रामीण पृष्ठभूमि में आषाढ़ मास का विशेष महत्व होता है। इस मास में किसान अपने खेतों में धान की रोपनी करते हैं। इस कार्य में उनका पूरा परिवार सहयोग देता है। वे सभी यह सोचकर उत्साहित होते हैं कि उनके खेत-खलिहान फिर से लहलहा उठेंगे।

**उत्तर 4.** भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के निम्नलिखित कारण थे–

(1) कबीर गृहस्थ होते हुए भी साधु-सा जीवन व्यतीत करते थे।

(2) वह सामाजिक कुरीतियों के कट्टर विरोधी थे।

(3) वह बाह्य आडंबरों के विरोधी थे।

**उत्तर 5.** जी नहीं, साधु की पहचान पहनावे के आधार पर नहीं की जानी चाहिए। कुछ आधारों पर यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि अमुक व्यक्ति साधु है-

(1) जो व्यक्ति आत्मा-परमात्मा के रहस्य को जानता हो।

(2) जो व्यक्ति साधुओं के समान व्यवहार करता हो।

(3) जिसका आचरण शुद्ध हो।

**उत्तर 6.** मोह और प्रेम में अंतर होता है। मोह में स्वार्थ की भावना निहित होती है जबकि प्रेम निस्वार्थ होता है। भगत ने अपने पुत्र की मृत्यु को सहज भाव से लिया था तथा उसे आत्मा का परमात्मा से मेल बताया था। उन्हें अपनी पुत्रवधू से भी प्रेम था। उसकी भलाई के लिए उन्होंने बहू के भाई को उसका दूसरा विवाह करने का आदेश दिया था।

## पाठ–3. लखनवी अंदाज़

**अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

**गद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) मुफस्सिल की पैसेंजर ट्रेन का अर्थ उस ट्रेन से है जो केन्द्रस्थ नगर को आस-पास के शहरों से जोड़ती है। लेखक भीड़ से बचकर नई कहानी के संबंध में सोचना चाहते थे तथा प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेना चाहते थे। इसलिए उन्होंने द्वितीय श्रेणी में यात्रा करने का निश्चय किया।

**उत्तर** (ii) लेखक खाली डिब्बा समझकर उसमें चढ़ा था परंतु लेखक ने देखा कि वहाँ एक बर्थ पर नवाबी नस्ल के एक सफ़ेदपोश सज्जन बैठे हुए थे।

**उत्तर** (iii) डिब्बे में बैठे सज्जन की आँखों में एक विशेष असंतोष दिखाई दे रहा था। ऐसे लगा मानो उनके एकांत बैठने में बाधा पड़ गई हो।

**गद्यांश - 2**

**उत्तर** (i) नवाब साहब ने सबसे पहले खीरों को अच्छी तरह से धोया और तौलिए से पोछा। उसके पश्चात खीरों के सिरे काटकर उन्हें गोदकर झाग निकाला और बहुत एहतियात से छीलकर, काटकर फाकों को करीने से सजाया।

**उत्तर** (ii) वे ग्राहक को खीरे के साथ जीरा मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च देते हैं।

**उत्तर** (iii) नवाब साहब अपना नवाबी सलीका दर्शाना चाहते थे।

**गद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) लेखक ने देखा कि नवाब साहब ने बिना खीरा खाए ही ऊँचे डकार की आवाज़ निकाली। यह देखकर उसके मन में प्रश्न उठने लगा कि यदि बिना खाए डकार आ सकती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों के भी कहानी लिखी जा सकती है।

**उत्तर** (ii) नवाब साहब ने बिना खीरा खाए, भरे पेट जैसा ऊँचा डकार मारा। उन्होंने बताया कि 'खीरा लज़ीज होता है लेकिन होता है सकील, नामुराद मेदे पर बोझ डाल देता है।'

**उत्तर** (iii) नयी कहानी से लेखक का आशय नई रचना से है।

**गद्यांश - 4**

**उत्तर** (i) (1) उन्होंने अनुमान लगाया कि नवाब साहब ने बिल्कुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट लिया होगा।

(2) अकेले वक्त काटने के लिए खीरे खरीदे होंगे।

**उत्तर** (ii) पहले नवाब साहब ने लेखक के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया था। अत: सहसा उनका भाव-परिवर्तन लेखक को अच्छा नहीं लगा। जब नवाब ने उन्हें खीरा खाने के लिए पूछा तो लेखक ने जवाब दिया 'शुक्रिया, किबला शौक फरमाएँ।'

**उत्तर** (iii) लेखक ने भी नवाब साहब से बातचीत करने में कोई उत्सुकता नहीं दिखाई और आत्म सम्मान में आँखें चुरा लीं।

**गद्यांश - 5**

**उत्तर** (i) नवाब साहब ने बहुत करीने से खीरे की फाँक पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च बुरक दी। नवाब साहब के चेहरे का प्रत्येक भाव-भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से स्पष्ट था कि उस प्रक्रिया में नवाब साहब का मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लावित हो रहा था।

**उत्तर** (ii) ताज़े खीरे की पनियाती फाँके देखकर लेखक के मुँह में पानी भर आया था। लेखक पहले इनकार कर चुके थे। आत्मसम्मान निभाहना अत्यंत आवश्यक था इसलिए इच्छा होते हुए भी उन्होंने इनकार कर दिया।

**उत्तर** (iii) नवाब साहब ने लखनवी अंदाज में लेखक को खीरे की फाँक देते हुए कहा 'वल्लाह शौक कीजिए, लखनऊ का बालम खीरा है।' लेखक ने उत्तर देते हुए कहा 'शुक्रिया, इस वक्त तलब महसूस नहीं हो रही, मेदा भी ज़रा कमजोर है, किबला शौक फ़रमाएँ।'

**गद्यांश - 6**

**उत्तर** (i) नवाब साहब ने बहुत यत्न से खीरा काटा, उस पर नमक-मिर्च लगाई और फिर एक-एक फाँक को उठाकर सूँघा, आनंदित हुए, मुँह में आए पानी को गले के नीचे उतारा और फिर खिड़की से बाहर फेंकते गए।

**उत्तर** (ii) खीरा खिड़की से बाहर फेंकने के बाद नवाब साहब ने तौलिए से हाथ-मुँह पोछा और लेखक की ओर देखने लगा तब लेखक को लगा जैसे नवाब साहब कह रहे हों – यह है खानदानी रईसों का तरीका।

**उत्तर** (iii) अपनी नवाबी का प्रदर्शन करने के लिए नवाब साहब खीरे खाने की बजाय फेंक रहे थे।नवाब साहब खीरा काटने की तैयारी और इस्तेमाल से थक गए।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** लेखन ने अनुमान के प्रतिकूल के डिब्बे में नवाब साहब को विराजमान पाया।

**उत्तर 2.** नवाब साहब जिस सलीके से खीरे काटकर अपनी तृप्ति और संतुष्टि के लिए खा रहे थे, उसी को देखते हुए लेखक को विचार आया की बिना घटना और पात्रों के नई कहानी की रचना हो सकती है।

**उत्तर 3.** नवाब साहब ने लेखक को डिब्बे में आते देखकर उसके खिलाफ असंतोष प्रकट किया था। लेकिन थोड़ी देर बाद नवाब साहब ने लेखक का अभिवादन कर खीरा खाने के लिए आमंत्रित किया। लेखक को उनका यही भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा।

**उत्तर 4.** निम्नलिखित कारणों से लेखक को महसूस हुआ की नवाब साहब उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं थे-

(1) नवाब साहब ने लेखक के प्रति संगति के लिए कोई उत्साह नहीं दिखाया।

(2) एक सहयात्री के प्रति जो उत्सुकता होनी चाहिए थी, वो उनके चेहरे पर नहीं थी।

**उत्तर 5.** नवाब साहब ने पहले खीरों को धोया और फिर तौलिए से पोंछ लिया। चाकू की सहायता से दोनों खीरों के सिर काटकर, उन्हें गोदकर झाग निकाला। एहतियात से छील, काटकर उन्हें करीने से सजाकर उसके ऊपर नमक-मिर्च बुरक दिया।

**उत्तर 6.** जब नवाब साहब ने लेखक से बातचीत की उत्सुकता न दिखाई तो लेखक ने भी आत्म-सम्मान से आँखें चुरा लीं।

**उत्तर 7.** लेखक को विचार आया कि यदि खीरे की सुगंध और कल्पना से पेट भरा जा सकता है तो बिना पात्रों, विचार और घटना के भी 'नई कहानी' लिखी जा सकती है।

**उत्तर 8.** लेखक ने नवाब साहब के चिंतन के बारे में अनुमान लगाते हुए सोचा-

(1) शायद नवाब साहब अकेले उस डिब्बे में सफ़र करना चाहते हों?

(2) शायद उन्होंने बचत के इरादे से सेकंड क्लास का टिकट लिया हो?

**उत्तर 9.** जब लेखक डिब्बे में कूदे थे तो वहाँ पहले ही नवाब साहब बैठे थे। नवाब साहब ने लेखक के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया था। इस कारण से लेखक ने भी आत्म सम्मान में नवाब साहब से आँखें चुरा ली थी।

**उत्तर 10.** (1) उस डिब्बे में भीड़ नहीं होती।

(2) एकांत मिल जाता है।

(3) प्राकृतिक दृश्यों का आनंद भी लिया जा सकता है।

**उच्च्य चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न**

**उत्तर 1.** (1) हो सकता है कि उन्होंने लेखक को नीचा दिखाने के लिए ऐसा किया हो।

(2) हो सकता है कि उनका स्वास्थ्य ठीक न हो।

उनका ऐसा करना उनके अभिमानी, मनमौजी स्वभाव की ओर संकेत करता है।

**उत्तर 2.** निम्नलिखित आधारों पर कहा जा सकता है नवाब बहुत सनकी होते हैं–

(1) उन्हें लजीज़ खाना पसंद होता है।

(2) उन्हें तीतर-बटेर की लड़ाई कराना पसंद होता है।

(3) साँडों की लड़ाई कराना नवाबों को पसंद है।

(4) मुजरे देखना नवाबों का शौक है।

**उत्तर 3.** सेकंड क्लास के एकांत डिब्बे में बैठे नवाब साहब को खीरा खाने की तलब हुई। नवाब साहब ने पहले खीरों को धोया और फिर तौलिए से पोछ लिया। चाकू की सहायता से दोनों खीरों के सिर काटकर, उन्हें गोदकर झाग निकाला। एहतियात से छील, काटकर उन्हें करीने से सजाकर ऊपर नमक-मिर्च बुरक दिया। इसके बाद एक-एक करके उन फाँको को उठाते गए और उन्हें सूँघकर खिड़की से बाहर फेंकते गए।

**उत्तर 4.** नहीं, बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती। लेखक को भी 'लखनवी अंदाज़' लिखने की प्रेरणा नवाब साहब से मिली थी। अत: कहानी लिखने के लिए कोई न कोई बिंदु अथवा घटना या पात्र का होना अत्यंत आवश्यक है।

## पाठ–4. एक कहानी यह भी

**अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

**गद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) लेखिका यह बताना चाहती है कि किस प्रकार उनके व्यवहार और व्यक्तित्व पर जाने-अनजाने उनके पिता का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ा।

**उत्तर** (ii) लेखिका के पिता उसकी तुलना उससे दो साल बड़ी बहन सुशीला से करते थे जो कि खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख थी। बात-बात पर तुलना होने के कारण लेखिका के मन में हीन भावना बैठ गई।

**उत्तर** (iii) गोरा रंग लेखिका के पिता की कमज़ोरी थी। वे लेखिका की बहन की प्रशंसा इसलिए करते थे क्योंकि वह भी गोरी ही थी।

**गद्यांश – 2**

**उत्तर** (i) लेखिका की माँ अत्यंत धैर्यशाली और सहनशील थीं। वह अपना फ़र्ज़ निभाने में सदैव तत्पर रहती थीं। वह त्याग की प्रतिमूर्ति थीं।

**उत्तर** (ii) लेखिका की माँ का त्याग उसके लिए आदर्श इसलिए नहीं बन सका क्योंकि उनका त्याग निहायत मजबूरी से भरा हुआ था। वह अपने खिलाफ़ होने वाले अनुचित व्यवहार का कभी विरोध नहीं करती थीं।

**उत्तर** (iii) लेखिका के पिता क्रोधी स्वभाव के थे। जबकि उनकी माता में बहुत धैर्य और सहनशक्ति थी।

**गद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) लेखिका के पिता राजनीति में सक्रिय थे। उनके घर राजनीतिक पार्टियों की बैठकें होती रहती थीं। वह चाहते थे कि लेखिका राजनीतिक पार्टियों की बहसें सुने और जाने कि देश में क्या हो रहा है।

**उत्तर** (ii) सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' सक्रिय था। पूरे देश में अंग्रेज़ों के खिलाफ़ रोष था। देश के युवा देशभक्त शहीदों के बलिदान से बहुत प्रभावित थे और देश पर मर मिटना चाहते थे।

**उत्तर** (iii) वह लेखिका को रसोई से दूर रखकर उनके भीतर देशभक्ति के गुण विकसित करना चाहते थे। उनका मानना था कि रसोई की भट्टी में लड़कियों की प्रतिभा जल जाती है।

**गद्यांश – 4**

**उत्तर** (i) लेखिका ने अपनी यादों को आत्मकथ्य के रूप में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने केवल उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख किया है, जिन्होंने उनके व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

**उत्तर** (ii) जब वह इंदौर में रहते थे, उस समय उनका बहुत मान-सम्मान था। वह अपने घर रखकर आठ-दस विद्यार्थियों को पढ़ाया-लिखाया करते थे। वह कांग्रेस के साथ-साथ समाज-सुधार के कार्यों में भी सक्रिय थे।

**उत्तर** (iii) अनपढ़ तथा जिसका कोई अस्तित्व और अपनी पहचान नहीं थी।

**गद्यांश – 5**

**उत्तर** (i) एक आर्थिक झटके के कारण वह इंदौर से अजमेर आ गए थे। अजमेर आकर उन्होंने अपने बलबूते पर अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश को पूरा किया, जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था जिसने उन्हें बहुत यश और प्रतिष्ठा दी।

**उत्तर** (ii) गिरती आर्थिक स्थिति के कारण वह अत्यंत क्रोधी हो गए थे। अपने अहम् के कारण वह अपने बच्चों को अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार नहीं बनाना चाहते थे। उन्हें इतना बड़ा विश्वासघात मिला था कि वे अपने बच्चों पर भी विश्वास नहीं करते थे।

**उत्तर** (iii) अपनों से मिले विश्वासघात ने लेखिका के पिता को शक्की बना दिया था।

**गद्यांश – 6**

**उत्तर** (i) पिता द्वारा उनकी तथा उनकी बहन की तुलना करना और उसकी प्रशंसा करना– ने लेखिका के भीतर हीन भावना को पैदा कर दिया था। यही कारण था कि अपनी उपलब्धियाँ उन्हें तुक्का मात्र लगती थी। उन्हें अपनी प्रतिभा पर शक होने लगता था।

**उत्तर** (ii) पिता को लेखिका अपने भीतर कुंठा के रूप में, प्रतिक्रिया के रूप में और कहीं प्रतिच्छाया के रूप में विद्यमान पाती है।

**उत्तर** (iii) केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालो को सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता की उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाये बैठा रहता है।

**गद्यांश – 7**

**उत्तर** (i) लेखिका ने बचपन में सतोलिया, लँगड़ी-टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो तथा गुड्डे-गुड़ियों के खेल खेलने के साथ अपने भाईयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंगें भी उड़ाई।

**उत्तर** (ii) 'पड़ोस-कल्चर' से अभिप्राय– आस-पड़ोस के लोगों से अच्छे संबंधों से है। इसके खत्म होने के कारण हम बहुत संकुचित, असहाय और असुरक्षित महसूस करते हैं।

**उत्तर** (iii) लेखिका के परिवार में कुल पाँच बहन और एक भाई था। लड़की होने के कारण उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित था। लेखिका ने तत्कालीन परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा की उस जमाने में घर की दीवारें केवल अपने घर तक ही सीमित नहीं थीं बल्कि एक दृष्टि से पूरे मोहल्ले तक फैली हुई थीं।

**गद्यांश – 8**

**उत्तर** (i) शीला अग्रवाल से लेखिका का परिचय सावित्री गर्ल्स कॉलेज में हुआ था जहाँ लेखिका ने 'फर्स्ट इयर' में दाखिला लिया था। उन्होंने लेखिका को पुस्तकों का चुनाव करके पढ़ना सिखाया। लेखिका द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों पर चर्चा करके शीला अग्रवाल ने लेखिका का साहित्य की दुनिया में प्रवेश कराया।

**उत्तर** (ii) आरंभ में लेखिका को शरतचंद्र चट्टोपाध्याय और प्रेमचंद जी ने प्रभावित किया। नदी के द्वीप ने लेखिका को इतना प्रभावित किया कि लेखिका ने अज्ञेय जी का उपन्यास 'शेखर -एक जीवनी' को पूरी समझ के साथ पढ़ा।

**उत्तर** (iii) 'त्यागपत्र' के रचनाकार जैनेंद्र है, जबकि 'चित्रलेखा' पुस्तक भगवती बाबू द्वारा रचित है। इन दोनों ही पुस्तकों की लेखिका के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। इन पुस्तकों के माध्यम से लेखिका के मन में देश व समाज के प्रति जागरूकता का विकास हुआ।

**गद्यांश – 9**

**उत्तर** (i) शीला अग्रवाल ने उन्हें घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। शीला अग्रवाल ने अपनी जोशीली बातों से लेखिका के भीतर बहते लहू को लावे में बदल दिया।

**उत्तर** (ii) लेखिका में अपने पिता से टक्कर लेने की हिम्मत शीला अग्रवाल की जोशीली बातों से आई। टकराव का यह सिलसिला तब तक चला, जब तक लेखिका ने राजेंद्र यादव से शादी नहीं कर ली।

**उत्तर** (iii) साहित्य का दायरा बढ़ाकर लेखिका की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका की रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया।

**गद्यांश – 10**

**उत्तर** (i) लेखिका के पिता विशिष्ट बनना और बनाना पसंद करते थे। उनका मानना था कि मनुष्य को ऐसे काम करने चाहिए जिससे उसका नाम हो, मान-सम्मान हो। जब उन्हें पता चला कि उनकी बेटी का समाज में नाम और दबदबा है तो वह अत्यंत प्रसन्न हुए। इस प्रकार लेखिका अपने पिता के कोप से बच पाई।

**उत्तर** (ii) जब प्रधानाचार्या ने बताया कि उनकी बेटी के कारण उनका कॉलेज चलाना मुश्किल हो गया है तो यह सुनकर वह अत्यंत प्रसन्न हो गए थे कि उनकी बेटी का पूरे कालेज में बहुत दबदबा है। इसलिए जब वे कॉलेज से लौटे, तो बहुत प्रसन्न थे; चेहरा गर्व से चमक रहा था।

**उत्तर** (iii) प्रिंसिपल का पत्र पढ़कर पिता जी आग बबूला होकर क्रोध में जलने लगे थे।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** लेखिका की बड़ी बहन सुशीला बहुत स्वस्थ और खूब गोरी थी। लेखिका के पिता बातों-बातों में उसकी बहन की प्रशंसा किया करते थे। इस कारण लेखिका के मन में अपने काले रंग और दुबले शरीर के प्रति हीन-भावना घर कर गई।

**उत्तर 2.** इस वाक्य के माध्यम से पुराने दौर और वर्तमान समय में होने वाले परिवर्तन को समझाया गया है। पहले के दौर में बच्चे केवल घर तक ही सीमित नहीं थे बल्कि बाहर जाकर भी अलग-अलग प्रकार के खेल खेला करते थे। वर्तमान समय में लोग घर तक ही सीमित हैं और मोबाइल टीवी इत्यादि ऑनलाइन माध्यमों का प्रयोग करके घर पर ही बैठे रहते हैं।

**उत्तर 3.** डॉ. अंबालाल लेखिका के पिता के अभिन्न और अंतरंग मित्र होने के साथ अजमेर के अति सम्मानित व प्रतिष्ठित डॉक्टर थे। उन्होंने लेखिका के भाषण को सुना था। अतः अपने मित्र को बधाई देने के लिए आए और लेखिका की धुआँधार तारीफ करते रहे।

**उत्तर 4.** लेखिका के पिता अपनों के विश्वासघात का शिकार हुए थे। वह तो सब पर आँख मूँद कर विश्वास किया करते थे परंतु जब उनके साथ विश्वासघात हुआ तो वह इतने शक्की और क्रोधी हो गए कि अपने परिवार और बच्चों पर भी विश्वास नहीं कर पाए।

**उत्तर 5.** लेखिका अपने भीतर पिता को कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिछाया के रूप में देखती हैं।

**उत्तर 6.** लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से उनके पिता और उनकी प्राध्यापिका का प्रभाव पड़ा। शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने उनके भीतर बहते लहू को लावे में बदला। पिता ने उन्हें राजनैतिक परिस्थितियों से अवगत कराया।

**उत्तर 7.** जब लेखिका से दो साल बड़ी बहन सुशीला की शादी हो गई, दोनों बड़े भाई भी आगे की पढ़ाई के लिए बाहर चले गए तो पिता का ध्यान पहली बार उन पर केंद्रित हुआ और इस प्रकार लेखिका के व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास शुरू हुआ।

**उत्तर 8.** लेखिका तथा उनके पिता के विचार नहीं मिलते थे। उनके पिता उन्हें सीमित दायरों में आज़ादी देना चाहते थे परंतु लेखिका को यह बंधन पसंद नहीं थे। लेखिका ने जब राजेन्द्र यादव से विवाह किया तब तक भी उनका टकराव अपने पिता से चला।

**उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न**

**उत्तर 1.** महानगरों में रहने वाले लोग 'पड़ोस-कल्चर' से वंचित रह जाते हैं। भागमभाग की ज़िंदगी में उन्हें नहीं पता कि उनके पड़ोस में कौन रह रहा है, वह आत्मकेन्द्रित हो गया है। केवल अपने विषय में सोचता है, उसके पास इतना समय नहीं कि वह अपने पड़ोसियों के सुख-दुख में उनके साथ खड़ा हो सके। वह उस व्यवहार से वंचित रह जाता है जो पड़ोसी एक-दूसरे से करते हैं।

**उत्तर 2.** 'आज़ाद हिंद फ़ौज' के मुकदमें के सिलसिले में विरोधस्वरूप दुकानें, स्कूल-कॉलेज बंद करने का आह्वान किया गया था। जो लोग नहीं कर रहे थे युवा वहाँ हड़ताल करवा रहे थे। युवा चौराहों पर खड़े होते थे और अपने भाषणों से सबको जागृत करते थे।

**उत्तर 3.** 1947 में लेखिका को दो खुशियाँ मिली–

(1) उनके लिए थर्ड इयर की कक्षाएँ पुनः शुरू कर दी गईं।

(2) देश को आज़ादी मिली।

उसे 'देश की आज़ादी' की खुशी बहुत महत्वपूर्ण लगी क्योंकि यह संपूर्ण भारतवर्ष के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

**उत्तर 4.** पहले लड़कियों का दायरा चारदीवारी तक सीमित होता था। लेकिन आज की स्थिति पूर्ण रूप से बदल गई हा। आज लड़कियाँ एक शहर से दूसरे शहर शिक्षा ग्रहण करने तथा खेलने जाती हैं। ऐसा केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आज भारतीय महिलाएँ विदेशों तक, अंतरिक्ष तक जाकर दुनिया में अपने देश का नाम रौशन कर रही हैं।

**उत्तर 5.** स्वाधीनता आंदोलन के दौरान जब हड़तालों, नारेबाज़ी और जलसों का ज़ोर था तब लेखिका ने अपने स्तर पर भागीदारी दी थी। उन्होंने अपने कॉलेज में हड़तालों, नारों आदि का सिलसिला शुरू कर दिया था। वह चौराहों पर बड़े जोशीले भाषण देती थीं तथा नारेबाजी किया करती थीं।

## पाठ–5. नौबतखाने में इबादत

**अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न**

**गद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) अमीरुद्दीन के नाना अली बख्श का खानदानी पेशा था– शहनाई बजाना। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में शहनाई बजाने जाया करते थे।

**उत्तर** (ii) उनके दिन की शुरुआत बाला जी मंदिर की ड्योढ़ी से होती थी। वे उस मंदिर के विग्रहों के समक्ष राग बदल-बदलकर शहनाई बजाया करते थे।

**उत्तर** (iii) जो पेशा बाप-दादा द्वारा अपनाया जाता है, उसे खानदानी पेशा कहते हैं।

**गद्यांश - 2**

**उत्तर** (i) शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।

**उत्तर** (ii) अमीरुद्दीन बिस्मिल्ला खाँ के नाम से प्रसिद्ध हैं। डुमराँव गाँव में उनका जन्म हुआ था।

**उत्तर** (iii) शहनाई के लिए डुमराँव गाँव की अधिक महत्ता है। शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।

**गद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) अमीरुद्दीन बाला जी मंदिर के नौबतखाने में रियाज़ करते थे। उसके लिए वह रसूलन बाई और बतूलन बाई के घर की ओर जाने वाले रास्ते का प्रयोग करते थे।

**उत्तर** (ii) उनके नाना के परिवार में संगीत का माहौल था। उनके नाना व मामा शहनाई वादक थे। रसूलन बाई और बतूलन बाई (गायिका बहनों) की सुरीली आवाज़ ने भी उनके अबोध मन पर अमिट छाप छोड़ी थी।

**उत्तर** (iii) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि उन दोनों बहनों को सुनकर उनका झुकाव संगीत की ओर बढ़ा।

**गद्यांश - 4**

**उत्तर** (i) गद्यांश में मुस्लिम पर्व 'मुहर्रम' का उल्लेख किया गया है। इस पर्व पर शिया मुसलमान हज़रत इमाम हुसैन और उनके कुछ वंशजों वे प्रति शोक प्रकट करते हैं।

**उत्तर** (ii) आठवीं तारीख का खाँ साहब से विशेष जुड़ाव था। उस दिन वह खड़े होकर शहनाई बजाते थे और दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए नौहा बजाते हुए जाते थे।

**उत्तर** (iii) उनके खानदान से मुहर्रम के दिनों में न कोई शहनाई बजाता था और न ही संगीत के किसी कार्यक्रम में भाग लेता था।

**गद्यांश - 5**

**उत्तर** (i) उस छोटे बालक को लगता था कि उसके नाना मीठी वाली शहनाई कहीं और रखते हैं। उन शहनाइयों के ढेर में से वह अपने नाना की मीठी शहनाई को ढूँढ़ा करता था।

**उत्तर** (ii) पत्थर पटककर वह सम दिखाया करते थे। एक बच्चा अपनी समझ के अनुसार अपनी प्रतिक्रिया देता था तो उसका ऐसा करना पूर्णत: उचित था।

**उत्तर** (iii) प्रस्तुत पंक्ति से आश्य बचपन में फिल्में देखने के शौक से हैं।

**गद्यांश - 6**

**उत्तर** (i) बिस्मिल्ला खाँ का काशी से असीम लगाव था। गंगा, बाला जी मंदिर और विश्वनाथ जी के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। उनका मानना था कि काशी से उन्हे तालीम मिली है और उसी ने उन्हें अदब सिखाया है।

**उत्तर** (ii) खाँ साहब 'काशी' को जन्नत मानते थे। उनका मानना था कि उन्होंने काशी से ही अदब और तालीम पाई है।

**उत्तर** (iii) ऐसा उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने कहा था क्योंकि काशी के प्रति उनका गहरा लगाव था।

**गद्यांश - 7**

**उत्तर** (i) संगीत, साहित्य और अदब की बहुत-सी परंपराएँ लुप्त होती देखकर बिस्मिल्ला खाँ बहुत दुखी होते थे।

**उत्तर** (ii) काशी में हिंदु-मुस्लिमों के तीज-त्योहार, अबीर-गुलाल, मुहर्रम-ताजिये एक दूसरे के पूरक रहे हैं। काशी में अब बहुत सी परंपराएँ लुप्त हो गई हैं परंतु फिर भी काशी की संस्कृति का अपना विशेष महत्त्व है।

**उत्तर** (iii) इसका अभिप्राय दो विभिन्न संस्कृतियों के संगम से है।

**गद्यांश - 8**

**उत्तर** (i) मुहर्रम के गमजुदा माहौल में बिस्मिल्ला खाँ इमाम-हुसैन और उनके वंशजों के प्रति अज़ादारी प्रकट करते थे। वह भावभीनी श्रद्धांजलि प्रकट करते थे। ऐसे अवसरों पर बड़े कलाकार का सहज मानवीय रूप आसानी से दिख जाता है।

**उत्तर** (ii) जवानी के दिनों में बिस्मिल्ला खाँ को कुलसम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान और सुलोचन और गीताबाली की फ़िल्में अधिक याद आती थीं।

**उत्तर** (iii) अज़ादारी से तात्पर्य किसी के मरने पर मातम या शोक मनाने से है।

**गद्यांश - 9**

**उत्तर** (i) काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है। यह आयोजन संकट मोचन मंदिर में होता है। अपने मज़हब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ गायन-वादन की इस उत्कृष्ट सभा में उपस्थित रहकर काशी के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते थे।

**उत्तर** (ii) काशी के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। वह जब भी काशी से बाहर रहते, तब विश्वनाथ और बाला जी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके थोड़ी देर के लिए शहनाई बजाया करते थे।

**उत्तर** (iii) काशी में संगीत का आयोजन संकटमोटन हनुमान मंदिर में होता था, जो करीब पाँच दिनों तक चलता था। इस आयोजन में संगीत के शास्त्रीय और लौकिक दोनों प्रकार के गायन – वादन होते हैं।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** बिस्मिल्ला खाँ के मामा सादिक हुसैन और अलीबख्श दोनों शहनाई वादक थे। जीवन के आरंभिक दिनों में बिस्मिल्ला खाँ को संगीत की प्रेरणा अपने दोनों मामा से मिली।

**उत्तर 2.** अमरीद्दीन जब सिर्फ़ चार साल के थे तो वह अपने नाना को शहनाई बजाते हुए सुनते थे। नाना के वहाँ से जाने के बाद उनकी वाली शहनाई को ढूँढ़ते थे, जो नाना के बजाने पर मीठी धून छेड़ती थी।

**उत्तर 3.** बिस्मिल्ला की तुलना कस्तूरी मृग से इसलिए की गई है, क्योंकि दोनों के गुण समान हैं। जिस प्रकार कस्तूरी अपनी खुशबू में पागल रहता है, उसी प्रकार बिस्मिल्ला खाँ भी अपने संगीत के प्रति पागल थे। जिस प्रकार कस्तूरी की खुशबू चारों ओर फैलती है, उसी प्रकार उनके संगीत की महक चारों ओर फैल जाती है।

**उत्तर 4.** बिस्मिल्ला खाँ बालाजी मंदिर में रियाज़ करने जाया करते थे। वह रसूलन बाई और बतूलन बाई के घर से होकर जाने वाले रास्ते से मंदिर जाया करते थे।

**उत्तर 5.** शहनाई को संगीत शास्त्रों में 'सुषिर वाद्यों' में गिना जाता है। अरब देशों में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य, जिनमें नाड़ी होती है– 'नय' कहलाते हैं। शहनाई को सुषिर वाद्यों में 'शाह' की उपाधि दी गई है।

**उत्तर 6.** वह अपने खुदा से सदैव सच्चे सुर माँगते है। इससे पता चलता है कि वह मनुष्यता से परिपूर्ण अत्यंत विनम्र इंसान थे।

**उत्तर 7.** डुमराँव में सोन नदी के किनारे एक विशेष प्रकार की घास उगती है जिससे रीड या नरकट बनाई जाती है। वही रीड शहनाई में प्रयोग होती है। प्रसिद्ध शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ का संबंध भी डुमराँव से ही है।

**उत्तर 8.** बिस्मिल्ला खाँ शहनाई द्वारा मंगलध्वनि उत्पन्न करते थे। शहनाई वादक के रूप में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ है। यही कारण है कि उन्हें शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

**उत्तर 9.** काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे–

(1) उन्हें देसी घी और जलेबी में अब वह स्वाद नहीं मिलता था।

(2) उन्हें यह देखकर दुख होता था कि अब संगतियों के प्रति गायकों के मन में आदर नहीं था।

**उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न**

**उत्तर 1.** बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) बिस्मिल्ला साहब का सहज सरल स्वभाव बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करता है।

(2) दोनो कौमों के प्रति आदर और प्रेम भाव।

(3) संगीत के प्रति उनकी लगन।

(4) दिखावे की प्रवृत्ति से कोसो दूर रहना।

**उत्तर 2.** अपने पाँचों वक्त की नमाज़ में वह खुदा से सदैव सच्चे सुर माँगते थे। वह अपने सुरों में ऐसी तासीर पाना चाहते थे कि उनकी आँखों से सच्चे मोतियों की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ। कलकलाते तेल में, कचौड़ी डाले जाने पर भी उन्हें सारे आरोह-अवरोह सुनाई देते थे।

**उत्तर 3.** मुहर्रम के प्रति उनका गहरा जुड़ाव था। वह पूरे दस दिनों का शोक मनाते थे। यह शोक पर्व 'हज़रत इमाम हुसैन' और उनके वंशजों के प्रति अज़ादरी प्रकट करने के लिए मनाया जाता है। उन दिनों उनके खानदान से कोई भी व्यक्ति संगीत के किसी कार्यक्रम में शिरकत नहीं करता था। आठवीं तारीख को खाँ आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए नौहा बजाते जाते थे।

**उत्तर 4.** (1) रसूलन बाई और बतूलन बाई ने उनके अबोध मन पर संगीत की वर्णमाला उकेरी।

(2) वह अपने नाना की मीठी शहनाई से बहुत प्रभावित थे।

## पाठ–6. संस्कृति

### अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

**गद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) जिस व्यक्ति में बुद्धि तथा योग्यता के बल पर कुछ नया करने की क्षमता हो, संस्कृत व्यक्ति कहलाता है। ऐसे व्यक्ति विनम्र रहकर नए सिद्धांत स्थापित करते हैं।

**उत्तर** (ii) न्यूटन ने अपनी बुद्धि-शक्ति से गुरत्वाकर्षण के रहस्य की खोज की इसलिए उसे संस्कृत मानव कह सकते हैं।

**उत्तर** (iii) आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य इसलिए नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह न्यूटन के समान संस्कृत मानव नहीं है।

**गद्यांश - 2**

**उत्तर** (i) आग का आविष्कार पेट की ज्वाला की प्रेरणा के कारण हुआ जबकि सुई-धागे के आविष्कार में शीतोष्ण से बटने तथा शरीर की सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा।

**उत्तर** (ii) पेट भरना या तन ढकना मनुष्य की संस्कृति की जननी इसलिए नहीं है क्योंकि मनुष्य को मिले इस ज्ञान की देन उसके पूर्वज हैं, जबकि संस्कृत व्यक्ति तो किसी नए ज्ञान की खोज करता है।

**उत्तर** (iii) हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से मिला है जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं बल्कि उनके अंदर की सहज संस्कृति के कारण ही प्राप्त किया है।

**गद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) भौतिक प्रेरणा और ज्ञानेप्सा को मानव संस्कृति के माता-पिता कहा गया है।

**उत्तर** (ii) लेखक के अनुसार मानव-संस्कृति वह है जिसके अंतर्गत मनुष्य नए आविष्कारों की खोज करें ताकि नए तथ्यों के दर्शन किए जा सकें।

**उत्तर** (iii) ईश्वर की प्राप्ति और मानवता के सुख के लिए सिद्धार्थ ने अपने घर को त्याग दिया था।

**गद्यांश - 4**

**उत्तर** (i) 'खान-पान, ओढना-पहनना, गमना-गमन के साधन, हमारे परस्पर कट मनरे के तरीके मानव संस्कृति के अंतर्गत आते हैं।'

**उत्तर** (ii) लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि आज सभ्यता और संस्कृति का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। मनुष्य के रहन-सहन का तरीका सभ्यता के अंतर्गत आता है। संस्कृति जीवन का चिंतन और कलात्मक सृजन है, जो जीवन को समृद्ध बनाती है।

**उत्तर** (iii) संस्कृति का कल्याण की भावना से नाता टूट जाने पर वह असंस्कृति होकर ही रह जाएगी। परिणामस्वरूप ऐसी संस्कृति असभ्य कहलाने लगेगी।

**गद्यांश - 5**

**उत्तर** (i) संस्कृति के नाम से जिस कूड़े-करकट का बोध होता है, लेखक ने उसका संबंध पुरानी रूढ़ियों से बताया है जिसमें मानव का अहित छिपा है। उसे पकड़कर बैठे रहना न तो संस्कृति है और न ही रक्षणीय वस्तु।

**उत्तर** (ii) लेखक ने संसार को परिवर्तनशील इसलिए बताया है क्योंकि इस संसार में किसी भी चीज को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता।

**उत्तर** (iii) मानव संस्कृति को कई बार वर्ण व्यवस्था एवं धर्म के नाम पर विभाजित करने की चेष्टा की गई, लेकिन ये सभी चेष्टाएँ विफल रही। इसलिए कहा जा सकता है कि मानव संस्कृति एक अभिवाज्य वस्तु नहीं है।

### अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

**उत्तर 1.** सभ्यता को संस्कृति का विकसित रूप भी कहा जा सकता है। आज सभ्यता और संस्कृति का प्रयोग अनेक अर्थों के साथ विभिन्न रूपों में किया जाता है। मनुष्य के रहन-सहन का तरीका सभ्यता के अंतर्गत आता है। संस्कृति जीवन का चिंतन और कलात्मक सृजन है, जो जीवन को समृद्ध बनाती है।

**उत्तर 2.** एक संस्कृत मानव वह है जो अपने ज्ञान एवं बुद्धि-विवेक से किसी नए तथ्य का दर्शन और आविष्कार करता है। इसके विपरीत सभ्य मानवे वह है जो इन आविष्कारों का उपयोग करके अपने रहन-सहन को समृद्ध करता है और खुद को सभ्य बनाता है।

**उत्तर 3.** आग की खोज स्वयं में ही एक बहुत बड़ी खोज रही है। इसे समय की दृष्टि के एक बड़ी खोज माना गया है क्योंकि उस समय मनुष्य में बुद्धि शक्ति का अधिक विकास नहीं हुआ था। और ना ही आग की खोज से पहले मनुष्य का अग्निदेवता से साक्षात्कार हुआ था।

**उत्तर 4.** आध्यात्मिक, भौतिक विशेषण आदि जुड़ने के साथ सभ्यता और संस्कृति जैसे शब्द भी भ्रामक बन जाते हैं।

**उत्तर 5.** लेखक ने वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति उसे कहा है जिसमें अपनी बुद्धि तथा योग्यता के बल पर कुछ नया करने की क्षमता हो। जिस व्यक्ति में ऐसी बुद्धि तथा योग्यता जितनी अधिक मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक संस्कृत होगा।

**उत्तर 6.** पाठ में न्यूटन को अधिक संस्कृत माना गया है। ऐसा इसलिए माना गया है क्योंकि न्यूटन ने अपनी बुद्धि-शक्ति से गुरत्वाकर्षण के रहस्य की खोज की। न्यूटन के पास अधिक बुद्धि शक्ति थी जो आज मनुष्य के पास नहीं है।

**उत्तर 7.** कपड़े के दो टुकडों को एक करके जोड़ने के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा। इसका उद्देश्य सर्दियों में शरीर को ठंड से बचाने से होगा।

**उत्तर 8.** अपनी सुविधाओं और सुरक्षा के लिए मानव द्वारा आत्महित की दृष्टि से अनेकों आविष्कार किए जाते हैं। जब मानव की आविष्कार करने की योग्यता, भावना, प्रेरणा और प्रवृत्ति का उपयोग विनाश करने के लिए किया जाता है, तब यह असंस्कृति बन जाती है। इन भावनाओं को संस्कृति की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

**उत्तर 9.** न्यूटन से भी अधिक विवेकशील और उन्नत जीवन शैली अपनाने वाले व्यक्ति को सभ्य कहा जाएगा क्योंकि न्यूटन द्वारा आविष्कृत गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के अलावा बहुत कुछ जानने के बाद भी उसने कुछ नए आविष्कार नहीं किए। बल्कि दूसरों के आविष्कारों का प्रयोग करते-करते सभ्य बन गया।

**उत्तर 10.** संस्कृत व्यक्तियों का सदा यही प्रयास रहता है कि वे अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नए तथ्य की खोज करें। इसमें भौतिक प्रेरणाओं का बहुत योगदान होता है। ऐसा व्यक्ति तन ढका और पेट भरा होने पर भी खाली नहीं बैठता है और भौतिक प्रेरणाओं के प्रति जिज्ञासु बना रहता है।

**उचित चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न-**

**उत्तर 1.** लेखक की दृष्टि में ऐसा इसलिए है क्योंकि संस्कृति और सभ्यता दोनों ही शब्दों का उपयोग बिना अर्थ जाने अधिकाधिक किया जाता है। भौतिक-सभ्यता और आध्यात्मिक-सभ्यता जैसे विशेषण जुड़ जाने के कारण शब्दों का अर्थ भी बदलता रहता है।

**उत्तर 2.** अनेक सुविधाएँ होने के बावजूद सिद्धार्थ को मानवता के दुख से दुख हो रहा था। उन्होंने इस दुखी मानवता के दुख के निवारणार्थ अपने सुख को ठोकर मारकर ज्ञान की प्राप्ति हेतु निकल पड़े जिसका लाभ उठाकर मनुष्य दुखों से छुटकारा पा सके।

**उत्तर 3.** लेखक ने ऐसा मानते हुए कहा है कि संस्कृति के नाम से जिस कूड़े-करकट के ढेर का बोध होता है, किसी पुरानी रूढ़ियों को, जिसमें मानव का अहित छिपा है, उसे पकड़कर बैठे रहना न तो वह संस्कृति है और न ही रक्षणीय वस्तु।

**उत्तर 4.** मानव द्वारा किए गए आविष्कार जब मानव कल्याण की भावना से जुड़ जाते है तो इन आविष्कारों को संस्कृति कहा जाता है। लेकिन जब इन्हीं आविष्कारों का प्रयोग विनाश के लिए किया जाता है तो ये असंस्कृति बन जाते हैं। असंस्कृति के परिणाम से हर जगह असभ्यता का वर्चस्व होगा जिससे ममुष्यता के सामने कई प्रकार की चुनौतियाँ खड़ी हो जाएँगी।

**उत्तर 5.** विद्यार्थी स्वयं करें

**उत्तर 6.** संस्कृति पाठ का उद्देश्य मनुष्य को सदा संस्कृत बने रहने की ओर अग्रसर करना है। इस पाठ के माध्यम से बताया गया है कि मानव कल्याण के लिए किया गया कोई भी आविष्कार और कार्य संस्कृति ही है। हमें सदैव सभ्य बने रहने की सीख देने के साथ लेखक के माध्यम से मनुष्य को सुसंस्कृत एवं सुसभ्य रहने का संदेश दिया गया है।

# क्षितिज : भाग 2– पद्य खंड

## पाठ–1. पद

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**पद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) गोपियों ने उद्धव को बड़भागी कहकर उस पर व्यंग्य किया है क्योंकि श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वह श्रीकृष्ण के प्रेम में नहीं डूबे थे।

**उत्तर** (ii) गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते और तेल की गगरी से की है। जिस प्रकार कमल के पत्ते और तेल की गगरी जल में नहीं डूबतीं ठीक उसी प्रकार उद्धव भी श्रीकृष्ण के प्रेम में नहीं डूबे।

**उत्तर** (iii) जैसे चीटियाँ गुड़ से अलग नहीं होना चाहतीं, ठीक उसी प्रकार गोपियाँ श्रीकृष्ण से अलग नहीं होना चाहतीं।

**पद्यांश - 2**

**उत्तर** (i) हारिल एक पक्षी होता है जो गिरने के भय से अपने पैरों में एक लकड़ी थामे रहता है अर्थात् उसे अपना सहारा मानता है। ठीक उसी प्रकार गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपना एकमात्र अवलंब मानती हैं। उन्होंने दृढ़ निश्चय से श्रीकृष्ण को अपने हृद्य में बसा रखा है।

**उत्तर** (ii) प्रेममार्गी गोपियों ने एकनिष्ठ श्रद्धा और भक्ति से श्रीकृष्ण को अपने हृद्य में बसा रखा है। वे दिन-रात, सोते-जागते श्रीकृष्ण का नाम जपती रहती हैं। उन्हें योग एक कड़वी ककड़ी के समान तथा रोग की भाँति प्रतीत होता है। इसलिए वे योग को अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं।

**उत्तर** (iii) गोपियाँ योग को चंचल और अस्थिर प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए उपयुक्त समझती हैं।

**पद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) गोपियों के मन की बात मन में ही रह गई क्योंकि श्रीकृष्ण उन्हें छोड़कर मथुरा जा बसे और उन्होंने गोपियों की सुध नहीं ली।

**उत्तर** (ii) जब प्रेममार्गी गोपियों के लिए श्रीकृष्ण ने उद्धव के माध्यम से योग-संदेश भिजवाया तो उनकी पीड़ा और अधिक बढ़ गई।

**उत्तर** (iii) प्रस्तुत पंक्ति का आश्य श्रीकृष्ण के लौटने की अवधि के बीतने की आशा में अपने मन को धैर्य बाँधती आ रही गोपियों से है। लेकिन उद्धव के हाथों योग का संदेश पाकर उनके हृद्य अधीर हो उठे। उनको अब श्रीकृष्ण पर विश्वास नहीं रहा।

**पद्यांश - 4**

**उत्तर** (i) गोपियाँ श्रीकृष्ण को राजधर्म की याद दिलाना चाहती हैं क्योंकि राजा का धर्म होता है कि वह सदैव प्रजा की रक्षा करें। न तो वह स्वयं अन्याय करे और न ही करने दे।

**उत्तर** (ii) श्रीकृष्ण ने गोपियों को योग का संदेश भिजवाया था। इस आधार पर उन्होंने कहा कि श्रीकृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है।

**उत्तर** (iii) प्रस्तुत पंक्ति में गोपियाँ श्रीकृष्ण को राजधर्म का स्मरण करवाते हुए कहती है कि प्रजा को सताना तथा उन पर अत्याचार करना राजधर्म नहीं है। उनकी यह आकांक्षा निहित है कि कृष्ण स्वयं गोपियों से मिलने के लिए उनके पास आएँ और उनकी विरह के दुखों को दूर करें।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** गोपियों ने उद्धव पर व्यंग्य करते हुए उसे भाग्यशाली बताया है। वे कहना चाहती हैं कि उद्धव तुम श्रीकृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रेम से वंचित हो और इतनी निकटता के बाद भी तुम्हारे मन में श्रीकृष्ण के प्रति अनुराग नहीं पैदा हो सका। ऐसा तो तुम जैसे भाग्यवान के साथ ही हो सकता है।

**उत्तर 2.** उद्धव ज्ञान-योग लेकर गोपियों को शांत करने आए थे। लेकिन गोपियों को ये संदेश आकर्षित नहीं कर पाया। गोपियाँ कृष्ण की विरह वेदना से पीड़ित थी, वह कृष्ण का इंतजार कर रही थीं।

**उत्तर 3.** उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे। वे श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के लिए योग संदेश लाए थे। लेकिन गोपियों को श्रीकृष्ण की आस थी। गोपियों की इस विरह-वेदना को उद्धव तनिक भी महसूस नहीं कर पाए।

**उत्तर 4.** गोपियों ने अपने लिए कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान इसलिए बताया है क्योंकि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में दबी लकड़ी को आधार मानकर उड़ता है उसी प्रकार गोपियों ने अपने जीवन का आधार कृष्ण को मान रखा है।

**उत्तर 5.** प्रेममार्गी गोपियों के लिए श्रीकृष्ण ने योग का संदेश भिजवा दिया था। जिसके फलस्वरूप उनकी विरहाग्नि और भी भड़क उठी थी परंतु श्रीकृष्ण उनकी सुध लेने नहीं आए। इसी कारण गोपियों को अपने मन की बात मन में दबाए रखने के लिए विवश होना पड़ा।

**उत्तर 6.** कमल का पत्ता जल में रहकर भी जल से नहीं भीगता। ठीक उसी प्रकार तेल लगी गागर पर जल की बूँदें नहीं टिकती।

**उत्तर 7.** उनका ऐसा कहना पूर्णत: उपयुक्त है क्योंकि भोली-भाली गोपियों ने केवल श्रीकृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम किया है।

**उत्तर 8.** प्रस्तुत पंक्ति से अभिप्राय यह है कि प्रीतिरूपी नदी में पाँव न डुबोना अर्थात् प्रेम में न डूबना। यह उद्धव के लिए कहा गया है।

**उत्तर 9.** गोपियों के अनुसार श्रीकृष्ण ने योग-संदेश भिजवाकर अपनी मर्यादा का उल्लंघन किया है। इसलिए वे भी धैर्य-धारण करके मर्यादा का पालन नहीं कर सकती।

**उत्तर 10.** उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते तथा तेल की गागर से की गई है। जिस प्रकार इन दोनों पर जल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, ठीक उसी प्रकार उद्धव पर श्रीकृष्ण का रंग नहीं चढ़ता।

**उत्तर 11.** गोपियाँ श्रीकृष्ण के आने की प्रतीक्षा बहुत समय से कर रही थीं परंतु उन्होंने स्वयं न आकर उद्धव के माध्यम से योग संदेश भिजवाकर मर्यादा का पालन नहीं किया। इसलिए गोपियाँ भी धैर्य धारण कर मर्यादा का पालन नहीं कर सकतीं।

**उत्तर 12.** गोपियों के अनुसार राजा का धर्म होता है कि वह प्रजा पर न स्वयं अन्याय करे और न ही किसी को अन्याय करने दे। उसे अपनी प्रजा का ध्यान अपनी संतान की भाँति रखना चाहिए।

**उत्तर 13.** निम्नलिखित परिवर्तनों के कारण गोपियाँ अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं–

(1) श्रीकृष्ण ने प्रेममार्गी गोपियों को योग संदेश भिजवाया।

(2) वह मथुरा जाकर कुशल राजनीतिज्ञ हो गए।

**काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न –**

**उत्तर 1.** गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) उनके वाक्चातुर्य में व्यंग्य का समावेश है।

(2) उनके वाक्चातुर्य में श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम झलकता है।

(3) वे भोग-मार्ग को प्रेम-मार्ग की तुलना में अत्यंत तुच्छ बताती हैं।

(4) वे योग को रोग बताती हैं।

**उत्तर 2.** गोपियों के तर्कों के अतिरिक्त निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं–

(1) कृष्ण की प्रवृत्ति ऐसी है कि वह एक जगह टिक कर नहीं रह सकते। प्रेम रस को पाने के लिए अलग-अलग डाली पर भटकते रहते हैं।

(2) उद्धव पर कृष्ण का प्रभाव तो पड़ा नहीं परन्तु लगता है कृष्ण पर उद्धव के योग साधना का प्रभाव अवश्य पड़ गया है।

**उत्तर 3.** गोपियों के पास प्रेम की शक्ति थी। वे श्रीकृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती थीं। प्रेम की शक्ति का ही प्रभाव था कि वे अपनी वाक्चातुर्य से ज्ञानी तथा नीतिज्ञ उद्धव से तर्क कर पाईं।

**उत्तर 4.** जी हाँ, गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है। आजकल के राजनीतिज्ञ भोली-भाली जनता से अनेक वादे करते हैं। परंतु चुनाव जीतने के पश्चात वे जनता की सुध भी नहीं लेते।

**उत्तर 5.** (1) उन्हें यह योगमार्ग कड़वी ककड़ी के समान लगता है।

(2) उन्हें योग साधना एक रोग की भाँति प्रतीत होती है, जिसके विषय में न उन्होंने कभी सुना न कभी देखा और न ही कभी भोगा।

**उत्तर 6.** भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) इन पदों में व्यंग्य का समावेश है।

(2) गोपियों ने कृष्ण को राजधर्म याद कराया है।

(3) गोपियों की एकनिष्ठ भक्ति झलकती है।

(4) योग को प्रेम की तुलना में अति तुच्छ बताया है।

## पाठ–2. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**पद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) लक्ष्मण ने धनुष टूटने के निम्नलिखित कारण बताएँ–

(1) श्री राम ने इसे भोले नयनों से देखा था।

(2) उनके छूने मात्र से यह टूट गया, इसमें उनका कोई दोष नहीं है।

(3) हमारी दृष्टि से सभी धनुष एक समान होते हैं।

(4) इस धनुष के टूटने से क्या लाभ और क्या हानि है?

**उत्तर** (ii) परशुराम ने लक्ष्मण को डराने के लिए कहा–

(1) मैं बाल ब्रह्मचारी अति क्रोधी मुनि हूँ।

(2) मैं विश्व में क्षत्रिय कुल के संहारक के रूप में जाना जाता हूँ।

(3) मैंने सहस्त्रबाहु की भुजाएँ काटी हैं।

**उत्तर** (iii) परशुराम वीर योद्धा, क्रोधी, बाल-ब्रह्मचारी, अहंकारी तथा क्षत्रिय कुल के विरोधी हैं तथा उनकी वाणी अत्यंत कठोर है। वह विश्व में क्षत्रिय-कुलद्रोही के नाम से जाने जाते हैं।

**पद्यांश - 2**

**उत्तर** (i) परशुराम जी ने विश्वामित्र से लक्ष्मण की शिकायत की ताकि वह लक्ष्मण को उनके बल, क्रोध के विषय में बताएँ और उसे समझाएँ।

**उत्तर** (ii) लक्ष्मण परशुराम से अनेक तर्क करके उनके विषय में अधिकाधिक बोलकर उनके क्रोध को बढ़ा रहे थे।

**उत्तर** (iii) क्योंकि शूरवीर अपनी वीरता का बखान अपने मुँह से नहीं करते।

**पद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) माता सीता के साथ विवाह करने के लिए श्री राम ने धनुष तोड़ा था। उनके ऐसा करने से परशुराम क्रोधित हुए थे।

**उत्तर** (ii) जिसने भी शिव-धनुष को भंग किया है, उसे परशुराम जी ने सहस्रबाहु के समान अपना शत्रु माना है। क्योंकि वह उनके गुरु शिव का धनुष था।

**उत्तर** (iii) परशुराम के सामने विनय करके भगवान राम ने उनके क्रोध को शांत करने का प्रयास किया।

**पद्यांश - 4**

**उत्तर** (i) रघुकुल में देवता, ब्राह्मण, हरिजन और गायों पर वीरता नहीं दिखाई जाती। इसलिए लक्ष्मण ने अपने क्रोध को नियंत्रण में कर लिया।

**उत्तर** (ii) लक्ष्मण जी का मानना है कि परशुराम के वचन ही करोड़ों वज्रों के समान हैं अर्थात् उन्होंने व्यर्थ ही धनुष, बाण और कुठार को धारण कर रखा है क्योंकि उनके कठोर वचन किसी अस्त्र-शस्त्र से कम नहीं हैं।

**उत्तर** (iii) प्रस्तुत पद्यांश में लक्ष्मण और परशुराम के बीच संवाद हुआ है। यह पद्यांश रामचरित्रमानस के बालकाण्ड से लिया गया है।

**पद्यांश - 5**

**उत्तर** (i) उन्होंने कहा कि मैंने इसे बालक जानकर बहुत बचाया है। परंतु कड़वा बोलने वाला यह बालक नि:संदेह वध योग्य है।

**उत्तर** (ii) कौशिक(विश्वामित्र) ने अत्यंत विनम्रता से कहा कि सज्जन पुरुष बच्चों के गुण-दोषों को नहीं गिना करते। अत: परशुराम बालक का अपराध क्षमा करें।

**उत्तर** (iii) परशुराम को क्रोधित होते हुए देखकर विश्वामित्र ने कहा कि 'हे मुनिवर साधु लोग तो बालक के गुण दोष की गिनती नहीं करते हैं। इसलिए इसके अपराध को क्षमा कर दीजिए।'

**पद्यांश - 6**

**उत्तर** (i) जब श्रीराम ने देखा कि परशुराम की क्रोधरूपी अग्नि बहुत भड़क चुकी है, तब उन्होंने जल के समान शीतल वचनों का प्रयोग किया ताकि वह परशुराम जी के क्रोध को शांत कर सकें।

**उत्तर** (ii) लक्ष्मण के निम्नलिखित व्यंग्य बाणों से परशुराम क्रोधित हो गए-

(1) परशुराम जी गुरु-ऋण उनके माथे मढ़ रहे हैं।

(2) लगता है ब्राह्मण देव का सामना श्रेष्ठ योद्धाओं से नहीं हुआ।

(3) परशुराम जी अपने घर के ही शेर हैं।

**उत्तर** (iii) नृपद्रोही परशुराम जी को कहा गया है क्योंकि परशुराम बाल ब्रह्मचारी थे। वह स्वभाव के अति क्रोधी थे। शिव के धनुष के टूटने के बाद परशुराम जी सुनकर परशुराम जी और क्रोधित हो गए थे।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** परशुराम अपने फरसे की ओर इसलिए देख रहे थे ताकि लक्ष्मण को फरसे की कठोरता तथा परशुराम के बल प्रताप का ज्ञान हो जिससे लक्ष्मण भयभीत हो जाए।

**उत्तर 2.** लक्ष्मण ने कहा कि देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय-इन पर हमारे कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती है। क्योंकि इन्हें मारने पर पाप लगता है और इनसे हारने पर अपयश होता है। अत: आप मारें भी तो आपके पैर ही पड़ने हैं।

**उत्तर 3.** विश्वामित्र ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि परशुराम चारों ओर विजयी होने के कारण राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। परशुराम जी इनके साहस, वीरता व क्षमता से अनभिज्ञ थे।

**उत्तर 4.** उन्होंने राम जी से कहा कि सेवक तो वह होता है जो सेवा कार्य करे। शत्रुतापूर्ण कार्य करने से लड़ाई बढ़ती ही है।

**उत्तर 5.** परशुराम के मुख से ऐसा सुनकर लक्ष्मण मुस्कुराने लगे और परशुराम जी को अपमानपूर्ण वचन कहने लगे।

**उत्तर 6.** (1) श्रीराम अत्यंत विनम्र स्वभाव के थे।

(2) शील आचरण के थे।

(3) बड़ों का सम्मान करते थे।

**उत्तर 7.** लक्ष्मण ने धनुष टूटने के कई कारण बताते हुए राम को निर्दोष बताया-

(1) बचपन में हमने बहुत से धनुष तोड़े हैं।

(2) इस धनुष के टूटने से क्या लाभ और क्या हानि?

(3) हमारी समझ से सभी धनुष एक समान होते हैं।

**उत्तर 8.** लक्ष्मण जी के पास परशुराम जी की हर बात को काटने के लिए तर्क थे। उनके वाक्चातुर्य में व्यंग्य का समावेश है। उन्होंने अपने व्यंग्य-बाणों से परशुराम जी के क्रोध को बहुत बढ़ा दिया था।

**उत्तर 9.** वह शिकायत करते हुए कहते है कि लक्ष्मण मंद बुद्धि बालक है। कुटिलता से परिपूर्ण यह बालक वध योग्य है। यह सूर्यवंश पर चंद्रमा के कलंक के समान है।

**काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न**

**उत्तर 1.** दोनों के व्यवहार में बहुत भिन्नता है–

(1) राम अत्यंत विनम्र है जबकि लक्ष्मण उग्र स्वभाव के हैं।

(2) राम शील आचरण के हैं जबकि लक्ष्मण के स्वभाव में अत्यधिक क्रोध है।

**उत्तर 2.** कई बार केवल साहस के साथ हम विपरीत परिस्थितियों का सामना नहीं कर सकते। यदि हमारे अंदर विनम्रता का भी समावेश हो तो हम कठिन से कठिन परिस्थिति से भी आसानी से निकल सकते हैं और यह सोने पर सुहागा होता है।

**उत्तर 3.** विद्यार्थी स्वयं करें।

**उत्तर 4.** लक्ष्मण हँसकर और थोड़े प्यार से कहते हैं, "मैं जानता हूँ कि आप एक महान योद्धा हैं। लेकिन मुझे बार-बार आप ऐसे कुल्हाड़ी दिखा रहे हैं जैसे कि आप किसी पहाड़ को फूँक मारकर उड़ा देना चाहते हैं।मैंने तो कोई भी बात ऐसी नहीं कही जिसमें अभिमान दिखता हो। फिर भी आप बिना बात के ही कुल्हाड़ी की तरह अपनी जुबान चला रहे हैं। आपके जनेऊ को

देखकर लगता है कि आप एक ब्राह्मण हैं इसलिए मैंने अपने गुस्से पर काबू किया हुआ है। हमारे कुल की परंपरा है कि हम देवता, पृथ्वी, हरिजन और गाय पर वार नहीं करते हैं।

**उत्तर 5.** (1) कवि तुलसीदास जी ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है।

(2) चौपाई और दोहा छंद का प्रयोग किया है।

(3) तुलसीदास जी ने अलंकारो के सटीक प्रयोग किया है।

(4) अनुप्रास, रूपक और उपमा अलंकारों की छटा दर्शनीय है।

(5) वीर रस तथा रौद्र रस द्रष्टव्य है।

(6) भाषा में लयबद्धता बनी रही है।

(7) इस काव्यांश की भाषा में व्यंग्यात्मकता का सुंदर संयोजन हुआ है।

(8) तुलसी का भाषा सौंदर्य अनुपम है।

(9) काव्य के सौंदर्य तथा आनंद में वृद्धि हुई है।

(10) यह काव्यांश रामचरितमानस के बालकाण्ड से लिया गया है।

**उत्तर 6.** सूर समर करनी करहिं,

कहि न जनावहिं आपु।

बिद्यमान रन पाइ रिपु,

कायर कथहिं प्रतापु।।

लक्ष्मण जी ने परशुराम जी पर व्यंग्य करते हुए कहा कि शूरवीर युद्ध भूमि में शत्रु के साथ युद्ध करते हैं जबकि कायर व्यर्थ की डींगें हाँकते हैं।

**उत्तर 7.** यदि हमारे सामने कुछ अनुचित हो रहा है और प्रेम से समझाने पर भी सामने वाला समझने को तैयार न हो तो क्रोध करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। यदि इससे किसी का जीवन बचता हो तो क्रोध अवश्य करना चाहिए।

**उत्तर 8.** विद्यार्थी स्वयं करें।

## पाठ–3. आत्मकथ्य

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**पद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) कवि ने अपने मन की तुलना गुनगुनाते हुए भँवरे के साथ की है। जिस प्रकार वह गुनगुनाकर अपनी कहानी कह रहा है। कवि यह नहीं समझ पा रहा है कि वह अपने जीवन की कौन सी कहानी गुनगुना रहा है।

**उत्तर** (ii) कवि के अनुसार संसार नश्वर है। जिस मनुष्य ने इस संसार में जन्म लिया है, उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है।

**उत्तर** (iii) आत्मकथा लिखने के लिए अपने मन कि दुर्बलताओं, कमियों का उल्लेख करना पड़ता है। जिसका लोग उपहास उड़ाते है। इसलिए कवि को लगता है कि उन्होंने आत्मकथ्य लिखकर दुनिया के सामने अपना मज़ाक बना दिया।

**काव्यांश - 2**

**उत्तर** (i) प्रस्तुत काव्यांश से कवि के विनम्र स्वभाव का ज्ञात होता है।

**उत्तर** (ii) कवि की जीवन रूपी गगरी उन्होनें खुद ही खाली की है। कवि के अनुसार उनका जीवन सरलता एवं दुर्बलता से भरा हुआ है और उन्होंने जीवन में कोई महान कार्य नहीं किया।

**उत्तर** (iii) कवि ने जीवन की एकमात्र पूँजी सहानुभूति को बताया है क्योंकि यही गुण मनुष्य को महान, उदार और सर्वप्रिय बनाता है।

**पद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने सुख भरे सपने के बारे में बताया है।

**उत्तर** (ii) कवि के पास स्वप्न में केवल अपनी प्रेयसी की स्मृतियाँ रह जाती है। इससे उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसकी प्रेयसी मुस्कुराकर भाग जाती है।

**उत्तर** (iii) कवि की प्रेयसी सुंदर एवं अत्यंत कोमल स्वभाव की थी।

**पद्यांश - 4**

**उत्तर** (i) कवि संसार में अपनी प्रेयसी की स्मृतियों के सहारे जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

**उत्तर** (ii) कवि ने वर्तमान की हर स्थिती को यथार्थ सुधार कर साहसपूर्ण कार्य किया है। छोटे से जीवन की कैसी बड़ी कथाएँ आज कहूँ उसकी ईमानदारी का प्रमाण हैं।

**उत्तर** (iii) कवि ने इस आत्मकथा को इसलिए साधारण बताया है क्योंकि उसे नहीं लगता था कि उसकी कथा में किसी को कुछ विशेष देने की क्षमता थी। उससे किसी प्रकार की वाहवाही भी प्राप्त नहीं की जा सकती थी।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** कविता में मधुप मन रूपी भौंरे को कहा गया है। वह प्रेमगीत गुनगुनाता हुआ अपनी कोई कहानी सुनाता है।

**उत्तर 2.** कवि उस सुख के आने की प्रतीक्षा करता ही रह गया जिसकी कल्पना करके वह स्वप्न से जाग गया था।

**उत्तर 3.** कवि का असंख्य जीवन इतिहास से आश्य उन अगणित लोगों से है जिन्हें अपनी आत्मकथा लिखने के बाद लोगों के व्यंग्य मलिन उपहास का सामना करना पड़ा।

**उत्तर 4.** प्रसाद ने अरुण-कपोलों और अनुरागिनी उषा का संबंध अनुपम सौंदर्य जैसा बताया है। कवि अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि नायिका के कपोल अर्थात् गाल में इतनी लालिमा थी कि उषा भी उसमें अपना सुहाग ढूँढती थी।

**उत्तर 5.** गंभीर अनंत-नीलिमा से कवि का तात्पर्य मन के भीतर छिपे भावों से है। कवि ने अनंत नीलिमा को जीवन का अंतहीन विस्तार बताया है। मनुष्य अपने मन में हर समय कई तरह के विचार उत्पन्न करता है। वे यदि सुखद होते हैं तो दु:खद भी होते हैं।

**उत्तर 6.** 'अभी समय नहीं' कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि उसे लगता है कि आत्मकथा लिखने का सही समय नहीं आया है। वह अपने अंतर्मन को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना नहीं चाहते हैं। आत्मकथा प्राय: जीवन के उत्तरार्ध में लिखी जाती है। परंतु अभी जीवन में ऐसा समय नहीं आया है।

**उत्तर 7.** आत्मकथ्य कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) कविता में नवीन शब्दों का प्रयोग किया गया है।

(2) कविता की भाषा सौंदर्य युक्त है।

(3) कवि ने मुक्तक छन्द में भी लय की सृष्टि की है।

**उत्तर 8.** कवि अपने जीवन को साधारण मानता है। कवि का ऐसा मानना है कि उससे अपने जीवन में अभी तक ऐसा कुछ हासिल नहीं किया जिससे वह लोगों के लिए प्रेरणादायक बन सके। उसका जीवन अभावों से भरा हुआ था जिन्हें वह दूसरों के साथ साझा नहीं करना चाहता।

**उत्तर 9.** जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1889 ई. को उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ था। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का विशिष्ट स्थान है। उनकी आरंभिक शिक्षा घर से ही पूर्ण हो सकी थी। इसके बाद जयशंकर प्रसाद संस्कृत, हिन्दी, फारसी, उर्दू के बतौर शिक्षक भी नियुक्त रहे। प्रसाद जी का जीवन कुल 48 वर्ष का रहा है। परंतु इन 48 वर्षों में कविता, उपन्यास, नाटक और निबंध के क्षेत्र में उन्होनें समाज में अमिट प्रतिष्ठा हासिल की। प्रसाद जी ने आरंभिक रचनाएँ ब्रजभाषा में भी की। प्रसाद जी की कविताओं में विनय, प्रकृति, प्रेम तथा सामाजिक भावनाएँ झलकती हैं। प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आँधी तथा इन्द्रजाल जयशंकर द्वारा रचिक प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं।

**उत्तर 10.** 'आत्मकथ्य' कविता में प्रसाद जी ने आत्मकथा लेखन के विषय में अपनी मनोभावनाएँ व्यक्त की है। अपने मित्रों के अनुरोध के बाद जयंशकर प्रसाद जी ने आत्मकथ्य कविता की रचना की। कवि जीवन को एक व्यथा-कथा मानते हैं। इसलिए उनके अनुसार आत्मकथा लिखने की कोई उपयोगिता नहीं है। इस कविता के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि फूल से फूल पर भटकते भौंरे की गुंजार क्या है ? कभी तृप्त न होने वाली प्यास की करुण कहानी है। डालों के मुरझाकर गिरने वाली पत्तियाँ जीवन की नश्वरता की कथा सुन रही है। इन आत्मकथाओं को सार्वजनिक करके क्या मिलता है? इन कथाओं को सुनाकर ये अपने ही ऊपर व्यंग्य करते है। स्वयं को उपहास का पात्र बनाते है।

**काव्यबोध रखने हेतु प्रश्न**

**उत्तर 1.** प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अपनी प्रेयसी के दूर होने का वर्णन किया है। कवि के मन-मस्तिष्क पर केवल उसकी स्मृति ही है। इन्हीं स्मृतियों को कवि अपने जीने का संबल अर्थात् सहारा बनाना चाहता है। कवि का कहना है कि उनकी मौन व्यथा थकी हुई है और शायद अभी उचित समय नहीं आया है कि वे अपनी आत्मकथा लिख सकें। कवि कहता है की मेरा जीवन इतना भी सार्थक नहीं कि मैं इसके बारे में बड़ी-बड़ी कहानियाँ सुनाता फिरूँ। इससे अच्छा तो यही होगा कि मैं मौन रहकर दूसरे के बारे में सुनता रहूँ।

**उत्तर 2.** कवि अपने उन मित्रों को 'खाली करने वाले' कह रहा है, जिन्होंने उसे आत्मकथा लिखने के लिए कहा। कवि उनसे आग्रह करता है कि मेरी आत्मकथा में मेरे जीवन के कटु अनुभवों को सुनकर तुम यह न समझ बैठो कि मेरे जीवन को रसहीन बनाकर सूनापन भरने वाले तुम्हीं स्वयं हो।

**उत्तर 3.** 'थकी सोई है मेरी मौन व्यथा' पंक्ति के माध्यम से कवि कहते हैं कि मेरी व्यथाएँ, कठिनाइयाँ, परेशानियाँ सब थक कर मौन हो चुकी हैं। कवि अपने जीवन को दुखों का और भागीदार नहीं बनाना चाहते। इसलिए वह मौन ही रहना चाहते हैं।

**उत्तर 4.** खिल-खिला कर हँसते हुए होने वाली बातें से अभिप्राय खुशियों से युक्त होने वाली बातों से हैं। कवि का कहना है कि उन्होंने हँसते खिल-खिलाते हुए कितने स्वप्न देखे थे, कितनी ही महात्वाकांक्षाएँ पाली थीं। लेकिन सारे सपने जल्दी ही टूट गये।

**उत्तर 5.** 'आत्मकथ्य' कविता में प्रसाद जी ने आत्मकथा लेखन के विषय में अपनी मनोभावनाएँ व्यक्त की है। जयशंकर प्रसाद जी के मित्रों ने उनसे आत्मकथा लिखने का निवेदन किया, जबकि जयशंकर प्रसाद जी अपनी आत्मकथा नहीं लिखना चाहते थे। उन्होंने इस काव्य में जीवन के यथार्थ एवं अभाव को दर्शाया है। इस संसार में मनुष्य किसी ना किसी के द्वारा दी गई चोट से आघात है। उन्होंने खुद को साधारण बताते हुए कहा है कि उनके अनुसार उन्होंने कोई ऐसा कार्य नहीं किया है, जिससे लोग उनकी आत्मकथा सुनकर वाह-वाही करेंगे। उन्हें तो लगता है कि अगर उन्होंने अपने जीवन का सत्य सबको बताया, तो लोग उनका उपहास उड़ाएंगे और उनके मित्र खुद को दोषी समझेंगे। उनके अनुसार जीवन में कोई महान कार्य ना कर पाने से उनकी जीवन रुपी गगरी खाली ही रह गई है। इस कविता से जयशंकर प्रसाद की महानता और सादगी का ज्ञात होता है।

**उत्तर 6.** इस पंक्ति के माध्यम से कवि का तात्पर्य उन पुरानी यादों को फिर से ताजा करने से है जिन्हें वह कभी अपने ह्रद्य में छिपा चुका था। कवि को दुनिया की बातें परेशान तो करती हैं। दुनिया और उसका दुख उसे आक्रांत कर देते हैं। लेकिन दूसरे ही पल वह स्वयं को संभाल लेता है।

**उत्तर 7.** कवि स्वयं को एक साधारण व्यक्ति के समान मानते हैं। इस कारण से कवि का मानना है कि उनका जीवन काफी छोटा है। वह अपनी सामान्य जिंदगी में घटी अनेक घटनाओं को बड़ी कथाएँ मानते हैं; किंतु वे नहीं चाहते कि उनकी ये कथाएँ लोगों के सामने जगजाहिर हो।

## पाठ–4. (i) उत्साह

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**पद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) कवि कहना चाहता है कि वर्षा न होने के कारण सभी जन बेचैन और अनमने से हैं। बादल से यह अपेक्षा की जा रही है कि वे कष्टग्रस्त मनुष्यों को कष्टों से छुटकारा दिलवाएँ।

**उत्तर** (ii) कवि बादलों को संबोधित करते हुए कहता है कि वे घनघोर गर्जन करते हुए आकाश में छा जाएँ और बरस कर तप्त धरा को शीतल करें तथा प्यासे-पीड़ित लोगों की प्यास बुझाएँ।

**उत्तर** (iii) कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि आकाश का कोई ओर-छोर न होने के कारण बादल किसी भी दिशा से आ सकते है।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** उत्साह कविता में निराला ने बादल को संबोधित किया है। कविता में बादलों को क्रांतिदूत माना गया है क्योंकि जब बादल गजरते है, तब सोए हुए लोग नींद से जाग जाते है।

**उत्तर 2.** विद्युत-छवि उर में का अर्थ बादल के हृद्य में छिपी बिजली से है। बिजली के चमकने पर सर्वत्र एक चमक-सी पैदा हो जाती है।

**उत्तर 3.** निराला बादल से धरती को शीतल करने के लिए कहते हैं। ताकि धरती पर रहने वाले लोगों की प्यास बुझाई जा सके।

**उत्तर 4.** उत्साह शब्द से तात्पर्य उमंग से है। यह शीर्षक इसलिए रखा गया क्योंकि बादल उत्साह, उमंग और क्रांति के प्रतीक होते हैं। वे अपने उत्साह से सबको प्रभावित करते हैं।

**उत्तर 5.** बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करते हैं-

(1) बादल पीड़ित और प्यासे प्राणियों की आकांक्षा को पूरा करने वाले हैं।

(2) बादलों से उत्साह पाकर ही कवि नवीन सृजन करने में सक्षम होता है।

**उत्तर 6.** बादल गरजो

घेर-घेर-घोर गगन, धाराधर ओ।

विद्युत-छवि उर में कवि नवजीवन वाले

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो

बादल गरजो।

**काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न**

**उत्तर 1.** उत्साह कविता के माध्यम से यह बताया गया है कि समाज में नव-निर्माण करने के लिए, सड़ी-गली रूढ़ियों को समाप्त करने के लिए मनुष्य के भीतर उमंग और उल्लास का संचार होना अत्यंत आवश्यक है।

**उत्तर 2.** कवि ने क्रांति लाने के लिए बादलों का आह्वान किया है क्योंकि बादल क्रांति विप्ल्व और नव-निर्माण का प्रतीक हैं। बादलों से प्रेरणा पाकर ही कवि अपनी रचनाओं से समाज को बदल सकता है।

**उत्तर 3.** कवि आह्वान करता है कि युवा शक्ति अपनी सृजन क्षमता से समाज को जागृत करें। समाज को कुरीतियों से परिचित करवाए क्योंकि युवा शक्ति ही देश की तस्वीर बदल सकने का सामर्थ्य रखती है।

**उत्तर 4.** जब गर्मी से धरा तप्त होकर जल रही होती है तथा प्राणी जल के लिए तड़प रहे होते हैं तो बादल बरसकर तप्त धरा को शीतल करते हैं तथा मृत प्राय प्राणियों को नवजीवन प्रदान करते हैं।

**उत्तर 5.** बादल आने से पूर्व प्राणियों की दशा बिल्कुल सही नहीं थी। पीड़ित और प्यासे जन जल के लिए तड़प रहे थे। सभी प्राणी उन्मन से थे।

## पाठ–4. (ii) अट नहीं रही है

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**काव्यांश - 1**

**उत्तर** (i) फागुन मास में प्राकृतिक सौंदर्य अपनी पराकाष्ठा पर होता है। नए-नए पत्तों से पेड़ों की डालियाँ भर जाती हैं। रंग-बिरंगे फूल प्रकृति के सौंदर्य को द्विगुणित करते हैं।

**उत्तर** (ii) रंग-बिरंगे फूलों को देखकर कवि प्रकृति के कंठ पर माला के समान सुशोभित होने की कल्पना करते हैं।

**उत्तर** (iii) प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि फाल्गुन में प्राकृतिक सौंदर्य चारों ओर बिखरा पड़ा है।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** 'अट नहीं रही है'- कविता में कवि फागुन की उन्माद को प्रकट करते है। कवि फागुन की हर तरफ फैली सुंदरता को अनेक तरीकों से दिखा रहे हैं। कवि अपनी कविता में कहते हैं कि जब मन प्रसन्न हो तो हर तरफ फागुन का ही सौंदर्य और उल्लास दिखाई पड़ता है।

**उत्तर 2.** प्रस्तुत पंक्ति में 'हरी' और 'लाल' डाल के विशेषण के रूप में प्रयुक्त किए गए हैं।

**उत्तर 3.** अट नहीं रही कविता छायावाद की उस खास विशेषता की पुष्टि कर रही है जिसमें अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना होता है।

**उत्तर 4.** प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि फागुन मास में प्रकृति का सौंदर्य बहुत अधिक मात्रा में बिखरा होता है। ऐसा लगता है कि प्राकृतिक सौंदर्य समा नहीं पा रहा है।

**उत्तर 5.** प्रस्तुत पंक्ति से कवि का अभिप्राय यह है कि प्रकृति की शोभा अर्थात् सौंदर्य चारों ओर फैला हुआ है और उसकी सुंदरता अधिकता में व्याप्त है।

**उत्तर 6.** प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि फागुन मास में मन इतना प्रसन्न होता है कि मन पंख लगाकर उड़ने लगता है।

**काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न**

**उत्तर 1.** अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है
कहीं साँस लेते हो
घर-घर भर देते हो
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो।

**उत्तर 2.** फागुन मास में प्रकृति का सौंदर्य पूर्ण पराकाष्ठा पर होता है। चारों ओर खिले रंग-बिरंगे फूल, पत्तियों से भरी डालियाँ सबको प्रभावित करती हैं। प्राकृतिक सौंदर्य सहज ही कवि का मन मोह लेता है और वह चाहते हुए भी फागुन की सुंदरता से अपनी आँख नहीं हटा पाता।

**उत्तर 3.** प्रत्येक ऋतु की अपनी विशेषता होती है परंतु फागुन अन्य सभी ऋतुओं से भिन्न है। यह वह ऋतु होती है जब प्रकृति का सौंदर्य पराकाष्ठा पर होता है। चारों ओर प्रकृति का सौंदर्य बिखरा होता है। भीनी-भीनी सुगंधित हवाएँ बह रही होती हैं।

**उत्तर 4.** निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(1) कवि ने फागुन मास का मानवीकरण किया है।

(2) खड़ी बोली का प्रयोग है।

(3) मुक्त छंद का प्रयोग है।

(4) कवि ने बोलचाल की भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

**उत्तर 5.** फागुन मास में प्राकृतिक सौंदर्य अपनी चरम सीमा पर होता है। चारों ओर उल्लास का वातावरण होता है। प्रकृति अपना शृंगार करती है। चारों ओर खिले रंग-बिरंगे फूल तथा हरी-भरी डालियाँ बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

**उत्तर 6.** प्रस्तुत कविता में फागुन मास के सौंदर्य का वर्णन किया गया है। इस मास में प्राकृतिक सौंदर्य समा नहीं पाता अर्थात् चारों ओर बिखरा होता है और हरी-भरी प्रकृति सबको सम्मोहित करती है।

## पाठ–5. (i) यह दंतुरित मुसकान

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**पद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) बालक अपने पिता (कवि) को नहीं पहचान पाया क्योंकि कवि उसे पहली बार मिल रहा है। कवि के प्रवासी होने के कारण उसका उससे परिचय नहीं हो पाया।

**उत्तर** (ii) कवि इस मुलाकात का श्रेय बालक की माँ को देता है क्योंकि माँ ने उस बालक को जन्म दिया है और वह उन दोनों के मध्य कड़ी का कार्य कर रही है।

**उत्तर** (iii) कवि उस बच्चे से कहता है कि यदि वह बच्चा इस तरह अपलक देखते-देखते थक गया हो तो उसकी सुविधा के लिए कवि उससे आँखें फेर लेगा।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** आँखे मिलने पर कवि को बालक की दंतुरित मुस्कान मोहक और आकर्षक लगती है।

**उत्तर 2.** जलजात का प्रयोग तालाब में खिलने वाले कमल के फूल के लिए किया गया है। कवि ने यहाँ बच्चे की सुंदर मुस्कान की तुलना तालाब में खिलने वाले इसी कमल के फूल से की है।

**उत्तर 3.** यह दंतुरित मुस्कान कविता लिखने के लिए कवि को छोटे बच्चे की मनोहरी मुस्कान ने प्रेरित किया है क्योंकि कवि का मानना है कि सुंदरता में ही जीवन का संदेश है और ये किसी भी कठोर हृद्‌य को पिघला सकती है।

**उत्तर 4.** धूल मिट्टी में जने शिशु को देखकर कवि को आभास हुआ जैसे कीचड़ में खिलने वाला कमल उसकी झोंपड़ी में खिल गया हो।

**उत्तर 5.** प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि बालक के सुकोमल स्पर्श से तो पत्थर-हृद्‌य व्यक्ति भी द्रवीभूत हो उठता है और उसका मन निर्मल हो जाता है।

**उत्तर 6.** शिशु अपने पिता अर्थात् कवि को अपलक देखे जा रहा था क्योंकि यह उनका प्रथम परिचय था। शिशु उसे पहचानता नहीं था इसलिए वह उसे अपलक देखे जा रहा था।

**उत्तर 7.** कवि को लगता है कि लगातार देखते रहने के कारण शिशु थक गया होगा और उसे असुविधा हो रही होगी इसलिए वह शिशु की ओर से आँखें फेर लेना चाहता है।

**उत्तर 8.** नारी निस्संदेह पूजनीय है, वंदनीय है। नारी सृष्टि का आधार है, नारी से ही सृष्टि का चक्र चलता है। नारी ने अनेक महापुरुषों को अपनी गोद में खिलाकर इस धरा को कृतार्थ किया है।

**काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न**

**उत्तर 1.** जब मनुष्य के मुख पर प्रसन्नता होती है तो उसका प्रभाव दूसरों पर बहुत सकारात्मक पड़ता है। देखने वाले भी प्रभावित होते हैं तथा वातावरण भी अत्यंत खुशनुमा हो जाता है। जब मनुष्य के मन में दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष के भाव हों तो चेहरे पर क्रोध का भाव आ जाता है। इससे वातावरण अत्यंत बोझिल हो जाता है।

**उत्तर 2.** जब शिशु अपने पिता (कवि) से मिलता है तो वह दृश्य अत्यंत अद्‌भुत होता है। कवि को ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसकी मुस्कान मृतक में भी जान डाल देगी। कवि को लगता है कि तालाब में खिलने वाला कमल उसकी झोंपड़ी में खिल गया हो।

## पाठ–5. (ii) फ़सल

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**पद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) फ़सलों को करोड़ों नदियों का जल सिंचित करता है। इसलिए कवि फ़सलों को कोटि-कोटि नदियों के पानी का जादू मानता है।

**उत्तर** (ii) किसानों और मज़दूरों के परिश्रम के अभाव में फ़सल अस्तित्व में आ ही नहीं सकती। फ़सल उगाने में प्राकृतिक तत्वों के साथ-साथ मानव श्रम का भी उतना ही महत्त्व है।

**उत्तर** (iii) मिट्टी के गुण-धर्म इस की उपजाऊ शक्ति है जो इसमें मिले अनेक तत्वों के कारण होती है। उन तत्वों की उपस्थिति के कारण ही मिट्टी भिन्न-भिन्न रंगों को प्राप्त करती है।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** 'फ़सल' कविता हमें उपभोक्तावादी संस्कृति के दौर से कृषि संस्कृति की ओर ले जाती है। इस कविता से यह भी ज्ञात होता है कि एक ओर प्रकृति के अनेकानेक तत्व फ़सल के लिए रूपांतरित होते हैं तो मानव श्रम भी इसके लिए आवश्यक है।

**उत्तर 2.** नागार्जुन ने अपनी कविता फ़सल के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि फ़सल क्या है? किन-किन तत्वों के योगदान से उसका यह अस्तित्व हमारे सामने आता है? इस कविता में कवि ने किसानों के परिश्रम एवं प्रकृति की महानता का गुणगान किया है। उनके अनुसार फ़सल पैदा करना किसी एक व्यक्ति के बस की बात नहीं। इसमें प्रकृति एवं मनुष्य दोनों का तालमेल लगता है।

**उत्तर 3.** कवि ने मनुष्य के हाथों के स्पर्श की महिमा की बात कही है। मनुष्य अपने हाथों से श्रम करके खेत जोतता है, बीज बोता है और सिंचाई करता है। अर्थात फ़सल उपजाने में मनुष्य के परिश्रम का अहम योगदान होता है।

**उत्तर 4.** कवि के अनुसार फ़सल ढ़ेर सारी नदियों के पानी का जादू, अनेक लोगों के हाथों के स्पर्श की गरिमा तथा बहुत सारे खेतों की मिट्टी के गुण का मिला जुला परिणाम है। फ़सल किसी एक की मेहनत का फल नहीं है। अर्थात इसमें सभी का योगदान शामिल हैं।

**उत्तर 5.** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि किसानों के हाथों का प्यार भरा स्पर्श पाकर ही ये फ़सलें इतनी फलती-फूलती हैं। यह किसानों के श्रम की गरिमा और महिमा ही है जिसके कारण फ़सलें इतनी अधिक बढ़ती चली जाती हैं।

**उत्तर 6.** कविता में फ़सल को उपजाने के लिए हवा, धूप, पानी, मिट्टी जैसे आवश्यक तत्वों की बात कही गई है।

**उत्तर 7.** उपरोक्त पंक्तियों का भाव यह है कि सूर्य की किरणें फ़सलों को पकाने में मदद करती हैं तथा हवा भी फ़सलों के लिए अत्यंत आवश्यक है। अत: सूर्य और हवा फ़सलों को पोषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न**

**उत्तर 1.** आज मनुष्य स्वार्थवश खेतों से अधिकाधिक फ़सलें प्राप्त करने के लालच में अनेक प्रकार के खादों, उर्वरकों एवम् कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है। जिसके फलस्वरूप मिट्टी के गुण-धर्म में गिरावट आ रही है।

**उत्तर 2.** जी नहीं। किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि मिट्टी में कुछ पैदा ही नहीं होगा तो प्राणी अपना भरण-पोषण कैसे करेंगे?

**उत्तर 3.** मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने के लिए हम अनेक उपाय अपना सकते हैं-

(1) जैविक कृषि करके।

(2) फ़सल-चक्र पद्धति अपनाकर।

(3) कम से कम कीटनाशकों का प्रयोग करके।

(4) अधिक से अधिक पेड़ लगाकर।

**उत्तर 4.** मिट्टी के गुण-धर्म से अभिप्राय उसके उपजाऊपन से है। यदि भूमि अधिक उपजाऊ होगी तो नि:संदेह हम बहुतायत मात्रा में अनाज प्राप्त कर सकते हैं।

## पाठ-6. संगतकार

**पद्यांश पर आधारित प्रश्न**

**पद्यांश - 1**

**उत्तर** (i) मुख्य गायक की आवाज़ चट्टान जैसी भारी है जबकि संगतकार की आवाज़ कमज़ोर और काँपती हुई थी।

**उत्तर** (ii) कवि अनुमान लगाता है कि शायद वह मुख्य गायक का छोटा भाई है या उसका शिष्य या फिर पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार है।

**उत्तर** (iii) मुख्य गायक और संगतकार एक दूसरे के पूरक है। संगतकार के बिना मुख्य गायक प्रसिद्धि के शिखर पर नहीं पहुँच सकता है।

**पद्यांश - 2**

**उत्तर** (i) जटिल तानों के जंगल में खो जाने से कवि का आश्य सुरों से भटक जाने से है। इस जंगल में गायक खो जाता है।

**उत्तर** (ii) गायक के पीछे छूटा हुआ सामान समेटकर और स्थायी को सँभाल कर संगतकार मुख्य गायक की सहायता करता है।

**उत्तर** (iii) स्थायी सँभालकर तथा उसके सुर समेट कर संगतकार मुख्य गायक की उसके बचपन की ओक ले जाता है।

**पद्यांश - 3**

**उत्तर** (i) संगीत में सबसे ऊँचा सप्तक 'तार सप्तक' होता है। इसके गायन में कलाकार का गला बैठने लगता है। उसकी साँस टूटने लगती है। उसका स्वर बुझने लगता है।

**उत्तर** (ii) ताकि मुख्य कलाकार अपना गाया गीत पुन: गा सके और स्वयं को अकेला न महसूस करे।

**उत्तर** (iii) मुख्य गायक को संगतकार अपने स्वर के माध्यम से यह बताता रहता है कि वह अकेला नहीं है। वह प्रत्येक परिस्थिति में उसके साथ है।

**अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** अनहद में भटकते चले जाने पर संगतकार मुख्य गायक की बहुत सहायता करता है। निराशा के अंधकार में जाने के बाद संगतकार उसे निराशा से उबार लेता है, उसके सुर में अपना सुर मिलाकर उसे पुनः गाने की प्रेरणा देता है।

**उत्तर 2.** संगतकार की आवाज की हिचक को उसकी असफलता का प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए। मुख्य गायक का साथ देते हुए भी संगतकार उसकी आवाज की महत्ता को कम नहीं होने देता।

**उत्तर 3.** संगतकार की आवाज मुख्य गायक की गरजदार तथा भारीभरकम आवाज को कोमलता प्रदान करती है। वह अपनी आवाज को कभी ऊपर नहीं उठाना चाहता, वह मुख्य गायक की आवाज की बराबरी भी नहीं करना चाहता। इसलिए उसकी आवाज सुंदर, कमजोर और काँपती हुई नजर आती है।

**उत्तर 4.** मुख्य गायक और संगतकार प्रत्येक परिस्थिति में एक-दूसरे का साथ देते हैं। जब मुख्य गायक सुरों के जटिल तानों के जंगल में खो जाता है, तो संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है, ठीक उसी प्रकार मुख्य गायक भी उसे अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका देता है।

**उत्तर 5.** वैसे तो प्रत्येक काल में संगतकारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। हमें ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिल जाएँगे परंतु वर्तमान समय में अधिकतर लोग संगतकार की भूमिका में नहीं रहना चाहते और वे स्वयं नाम, यश कमाना चाहते हैं।

**उत्तर 6.** जब मुख्य गायक नौसिखिया होता है, जब वह जटिल तानों में खो जाता है, स्वरों की गहराई में डूब जाता है। जब उसका उत्साह अस्त होने लगता है, उसका स्वर डूबने लगता है- ऐसी स्थितियों में संगतकार मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं।

**उत्तर 7.** संगतकार के माध्यम से कवि उन लोगों की ओर संकेत करना चाह रहा है जो किसी भी क्षेत्र से जुड़े मुख्य कलाकार का साथ देकर उनकी सहायता करते हैं और उन्हें सफलता के चरम शिखर तक पहुँचाते हैं।

**उत्तर 8.** प्रस्तुत पंक्तियों का भाव यह है कि जब संगतकार अपनी कोमल, काँपते स्वरों से मुख्य गायक को सहारा देने का प्रयास करता है तो यह उसकी मनुष्यता है। एक सच्चा कलाकार स्वयं पीछे रहकर मुख्य गायक को प्रसिद्धि दिलवाता है।

**उत्तर 9.** सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के बाद यदि मुख्य कलाकार लड़खड़ाता है तो उस समय संगतकार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे स्थायी को सँभाले रहते हैं और मुख्य गायक के स्वर में अपना सुर मिलाकर उसका हौसला बढ़ा देते हैं।

**उत्तर 10.** संगतकार कविता का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र में साथी कलाकारों का महत्त्व प्रतिपादित करना है। ऐसे लोग स्वयं पीछे रहकर मुख्य कलाकारों को नाम और प्रतिष्ठा दिलवाते हैं। ऐसे लोग मनुष्यता का पर्याय होते हैं।

**काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न**

**उत्तर 1.** संगतकार जैसे व्यक्ति फ़िल्म, नाटक, राजनीति, साहित्य आदि अनेक क्षेत्रों में दिखाई देते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि समाज के सभी मुख्य क्षेत्रों में इन साथी कलाकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इनके सहयोग के बिना तो किसी भी कार्यक्रम की सफलता संभव नहीं है।

**उत्तर 2.** हम किसी फ़िल्म का उदाहरण ले सकते हैं। किसी फ़िल्म की सफलता केवल अभिनेता और अभिनेत्री पर निर्भर नहीं करती। उस फ़िल्म की सफलता में– निर्माता, निर्देशक, गीतकार, संगीतकार, गायिका आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

**उत्तर 3.** ऐसी स्थिति में संगतकार अपनी कोमल और कमज़ोर आवाज़ में मुख्य गायक का साथ देते हुए उसे बिखरने से बचा लेता है। संगतकार मुख्य गायक को तसल्ली देता है कि वह अकेला नहीं है और उसे अहसास कराता है कि वह प्रत्येक परिस्थिति में मुख्य गायक का साथ निभाएगा।

**उत्तर 4.** इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं–

(1) कई बार प्रतिभा होते हुए भी उन्हें उचित अवसर नहीं मिलता।

(2) कई बार स्वार्थी लोग स्वार्थवश उन्हें आगे बढ़ने ही नहीं देते।

## कृतिका : भाग 2

## पाठ–1. माता का अँचल

**पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** लेखक अपने पिता जी को बाबू जी कहता था। लेखक के पिता जी जब रामायण का पाठ करते थे तब बालक आइने में अपना चेहरा निहारा करता था।

**उत्तर 2.** भोलानाथ के पिता सुबह जल्दी उठकर नहा-धोकर पूजा करते थे। उसके बाद 'रामनामा बही' पर हज़ार बार राम नाम लिखते थे। उसके बाद कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर पाँच सौ बार राम नाम लिखकर आटे की गोलियों में लपेटकर मछलियों को खिलाने जाया करते थे।

**उत्तर 3.** वे पानी से घी, धूल से आटा, बालू से चीनी बनाकर दावत तैयार कर लिया करते थे। उससे पहले वे धूल की मेड़ से दीवार तथा तिनकों से छप्पर बनाकर घरौंदा बनाया करते थे।

**उत्तर 4.** (1) भभूत लगाते ही बालक का बम भोला बन जाना।

(2) माता द्वारा अपने हाथों से खिलाना।

(3) मित्रों को देखकर बालक का रोना भूल जाना।

(4) साँप से डरने के बाद माँ की गोद न छोड़ना।

**उत्तर 5.** वे चबूतरे के छोर पर घिरनी गाड़ते थे। नीचे की गली को वे कुआँ बना देते थे। दो लड़के बैलों की तरह मोट खींचते थे। चबूतरा खेत, कंकड़ बीज और ठेंगा। हल जुआठा बन जाता था। वे हाथों-हाथ फ़सल तैयार करके काट लेते थे।

**उत्तर 6.** आज की ग्रामीण संस्कृति में बहुत से परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता देखने को मिलती है। संचार क्रांति के कारण गाँव भी आधुनिक हो गए हैं। स्त्री-शिक्षा को बढ़ावा मिल रहा है।

**उत्तर 7.** यह बाल मनोवृत्ति होती है कि बच्चे बहुत जल्दी सब भूल जाते हैं। बालक भोलानाथ की खेलने में अधिक रूचि होगी। जब वह अपने साथियों को देखता होगा तो सिसकना भूलकर खेलने में मस्त हो जाता होगा।

**उत्तर 8.** बच्चे का पिता से गहरा लगाव था परंतु मुसीबत पड़ने पर वह अपनी माँ के अँचल में स्वयं को सर्वाधिक सुरक्षित महसूस करता है। अत: यह शीर्षक पूर्णत: उपयुक्त है।

अन्य शीर्षक- मेरा बचपन, मेरे बचपन की यादें।

**उत्तर 9.** भोलानाथ और उसके साथी घर में उपलब्ध सामान तथा टूटी-फूटी वस्तुओं के साथ खेला करते थे जबकि आज-कल के बच्चों के पास महँगी खेल सामग्रियाँ होती हैं। बैटरी से चलने वाले खिलौने होते हैं।

**उत्तर 10.** भोलानाथ ने बैजू तथा अन्य लड़कों के साथ मिलकर मूसन तिवारी को चिढ़ाया था। मूसन तिवारी द्वारा शिकायत किए जाने पर गुरु जी ने बालक भोलानाथ की बहुत खबर ली थी।

**उत्तर 11.** गुरु जी से फटकार पड़ने के बाद बालक के पिता जी ने अनुनय विनय करके गुरु जी से माफ़ी मांगी और बालक भोलानाथ को घर ले आए। रास्ते में अपने मित्रों को देखकर बालक चुप हो गया।

**उत्तर 12.** सभी बच्चे मिलकर चूहे के बिल में पानी डाल रहे थे। तब उस बिल से साँप निकल आया था जिसे देखकर भोलानाथ वहाँ से भाग खड़ा हुआ था।

**उत्तर 13.** (1) माता अपने हाथों से बच्चे को भोजन कराती थी।

(2) पिता उसे नहला-धुलाकर अपने साथ पूजा में बैठाया करते थे।

(3) पिता अपने बच्चे के साथ वक्त बिताते थे। उसके खेलों का हिस्सा बनते थे।

**उत्तर 14.** बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को उनके साथ रहकर, उनकी सिखाई हुई बातों में रुचि लेकर, उनके लिए खेल करके, उन्हें चूमकर, उनकी गोद में या कधे पर बैठकर प्रकट करते हैं।

**उत्तर 15.** भोलानाथ और उसके साथियों ने मूसन तिवारी को चिढ़ाया था। जिस कारण उन्हें बहुत गुस्सा आ गया था और उसने उनकी शिकायत गुरु जी से की थी।

## पाठ–2. साना-साना हाथ जोड़ि...

**पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** लेखिका को बताया गया था कि मौसम साफ़ होने पर हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी कंचनजंगा दिखाई देती है। परंतु आकाश में बादल होने के कारण उसे कंचनजंगा दिखाई न दी।

**उत्तर 2.** जब भी किसी बौद्ध अनुयायी की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए किसी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं, जिन पर मंत्र लिखे रहते हैं। किसी नए काम के शुभारंभ में रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

**उत्तर 3.** जितेन नार्गे ने बताया कि वहाँ 'गाइड' फ़िल्म की शूटिंग हुई थी। इसी स्थान पर दो स्थानीय जातियों (लेपचा और भुटिया) के बीच चले लंबे झगड़े के बाद संधि-पत्र पर हस्ताक्षर हुए थे।

**उत्तर 4.** रात के समय सितारों से नहाया गंतोक लेखिका को अत्यंत सम्मोहित कर रहा था। उसे अपने अस्तित्व का अहसास ही नहीं हो रहा था। वह सौंदर्य उन्हें आत्मिक सुख और आनंद प्रदान कर रहा था।

**उत्तर 5.** लेखिका ने इसे जीवन की अनंतता का प्रतीक माना है। उसका सौंदर्य देखकर लेखिका को लगा जैसे वह उसे जीवन में निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है।

**उत्तर 6.** सिक्किम एक स्वतंत्र रजवाड़ा था जो भारत में मिल गया था। पहाड़ी जीवन होने के कारण वहाँ का जीवन अत्यंत कठिन था। गंतोक को पर्यटन स्थल बनाने के लिए बहुत परिश्रम किया गया है। इसलिए इसे मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है।

**उत्तर 7.** प्रकृति के दृश्यों को छाया और माया का अनूठा खेल कहा गया है। लेखिका को लग रहा था जैसे प्रकृति उसे जीवन के पाठ पढ़ाकर सयानी बनना चाहती है और बताना चाहती है कि जीवन में परिस्थितियाँ सदैव एक-सी नहीं रहेंगी।

**उत्तर 8.** मणि लेखिका मधु कांकरिया की मित्र थी। उसने बताया कि पहाड़ी कुत्ते केवल चाँदनी रात में भौंकते हैं।

**उत्तर 9.** झरने की तरह निरंतर चलायमान सौंदर्य ही जीवन का आनंद है। यदि हम जीवन में आगे नहीं बढ़ेंगे तो एक स्थान पर ठहर जाएँगे और हमारे जीने की आशा क्षीण हो जाएगी तथा जीवन एक ढर्रे पर ही चलता रहेगा।

**उत्तर 10.** (1) प्रेयर व्हील के विषय में नार्गे ने बताया कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।

(2) किसी बौद्ध अनुयायी की मृत्यु होने पर 108 श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं।

(3) यूमथांग में फूलों की वादियाँ और घाटियाँ मिलेंगी।

**उत्तर 11.** कुटिया में घूमते 'प्रेयर व्हील' को दिखाकर लेखिका को बताया गया था कि उस प्रेयर व्हील के घुमाने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। लेखिका को लगा कि धर्म के क्षेत्र में पूरे भारत की आत्मा एक सी है। सभी विभिन्न कर्मकांडों द्वारा अपने पाप धोते हैं।

**उत्तर 12.** (1) जैसे-जैसे ऊँचाई पर चढ़ते गए हिमालय विशाल से विशालतर होता चला गया।

(2) चारों तरफ़ हिमालय की गहनतम घाटियाँ और वादियाँ थीं।

(3) घटाओं से आगे पूरी तरह से बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई दे रहे थे।

**उत्तर 13.** लेखिका के पूछने पर कि क्या वह सिक्कमी है? तो उस युवती ने उत्तर दिया कि नहीं वह इंडियन है। यह सुनकर लेखिका को बहुत अच्छा लगा था। सिक्किम स्वतंत्र रजवाड़ा भारत में इस कदर घुल-मिल गया था कि कोई मान ही नहीं सकता कि सिक्किम कभी भारत का हिस्सा नहीं था।

**उत्तर 14.** आज की युवा पीढ़ी द्वारा प्रकृति का दोहन किया जा रहा है। वह प्रकृति को प्रदूषित कर रहा है। केमिकल्स आदि को नदियों में बहाया जा रहा है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है, जिससे वायु में ज़हर घुल रहा है। नदियों को दूषित किया जा रहा है।

**उत्तर 15.** विद्यार्थी स्वयं करें।

**उत्तर 16.** यह वरदान इसलिए है क्योंकि वह अभी पर्यटन स्थल नहीं बना है, यदि वहाँ पर्यटक जाएँगे तो वे वहाँ गंदगी फैलाएँगे, वाहनों के प्रयोग से प्रदूषण बढ़ जाएगा। पर्यटन स्थल न होने के कारण वह अभी अपने प्राकृतिक रूप में है, जो उसके लिए वरदान है।

**उत्तर 17.** ड्राइवर-कम-गाइड जितेन नार्गे हँसमुख और मिलनसार व्यक्ति था। उसे वहाँ की भौगोलिक, ऐतिहासिक, जन-जीवन भाषा आदि की सभी जानकारियाँ थीं। वह एक कुशल ड्राइवर भी था। उसने अपने अनुभवों से यात्रा को अत्यंत रोचक बना दिया था।

**उत्तर 18.** प्रकृति ने जल संचय की बहुत सुंदर व्यवस्था की है। हिम शिखर हमारे जल स्तंभ हैं। प्रकृति इनमें अद्भुत तरीके से जल संचित कर लेती है और गर्मियों में पीड़ित प्यासे लोगों की प्यास बुझाती है।

**उत्तर 19.** फ़ौजी छावनी पर लिखा था– 'वी गिव अवर टुडे, फॅार योर टोमारो'

इसे पढ़ने के बाद लेखिका का मन इसलिए उदास हो गया कि देश की पहरेदारी करते हुए उन्हें अपने घर-परिवार से दूर रहना पड़ता है।

**उत्तर 20.** जितेन ने बताया कि जहाँ गुरु नानक के फुटप्रिंट हैं वहीं उनकी थाली से कुछ चावल छिटककर गिर गए थे। जिससे अब चावल की खेती होती है।

**उत्तर 21.** त्याग, सेवा, समर्पण देशभक्ति आदि।

**उत्तर 22.** सीमा पर बैठे फ़ौजी अनेक कठिनाइयों से जूझते हैं। जैसे–

(1) वे कड़कड़ाती ठंड में जहाँ पेट्रोल के अलावा सब कुछ जम जाता है, वे मुस्तैदी से अपना कर्तव्य निभाते हैं।

(2) उन्हें प्रत्येक पल अपनी जान का खतरा होता है। वे जान हथेली पर रखकर हमारी सीमाओं को सुरक्षित रखते हैं।

**उत्तर 23.** हमें सदैव हृदय से उनका आभारी होना चाहिए। उनके साथ हमेशा सहानुभूति, प्यार और सम्मान के साथ पेश आना चाहिए। उनके जज़्बे को सदैव सलाम करना चाहिए।

## पाठ–3. मैं क्यों लिखता हूँ?

**पाठ पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

**उत्तर 1.** हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंत: व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है। जापान जाने के बाद जब लेखक ने हिरोशिमा विस्फोट के पीड़ितों की पीड़ा को महसूस किया तो लेखक के मन से उसे लिखने के लिए प्रेरित नहीं जगी। हिरोशिमा के पीड़ितों को देखकर लेखक को पहले ही अनुभव हो चुका था परंतु जले पत्थर पर किसी व्यक्ति की उजली छाया को देखकर उसको हिरोशिमा में विस्फोट से प्रभावित लोगों के दर्द की अनुभूति कराई तथा लेखक को लिखने के लिए प्रेरित किया।

**उत्तर 2.** जी हाँ, हिरोशिमा की घटना इस बात को पूर्ण रूप से प्रमाणित करती है कि मानव द्वारा विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग किया जा सकता है। आज हर देश परमाणु अस्त्रों को बनाने में लगा हुआ है जो आने वाले भविष्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है। कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ विज्ञान का दुरुपयोग करके भयानकतम स्थिती पैदा की जा सकती है।

**उत्तर 3.** लेखक को एक पत्थर को देखने के बाद हुई अनुभूती ने हिरोशिमा का भोक्ता बना दिया। विस्फोट के बाद उस पत्थर पर रेडियोधर्मी किरणों की अमिट तस्वीर छप चुकी थी जिसे देखने के बाद लेखक को हिरोशिमा में बम वाली घटना की अनुभूति हुई।

**उत्तर 4.** लेखक को निम्नलिखित बातें लिखने के लिए प्रेरित करती है–

(1) आंतरिक विवशता

(2) अनुभूती

(3) स्वयं को जानने के लिए लिखने की प्रेरणा

**उत्तर 5.** अनुभूति के अतिरिक्त बाहरी दबाव भी लिखने का कारण बनते हैं। किसी भी विषय पर लिखते समय भीतरी विवशता से प्रेरित होकर ऐसी अनुभूति जागृत होती हैं कि वह अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल हो उठता है। लेखक का हिरोशिमा विस्फोट पर कविता लिखने का कारण आंतरिक अनुभूति और बाहरी दवाब दोनों था।

**उत्तर 6.** वैचारिक वैमनस्यता को भुलाकर दो समुदायों में एक–दूसरे के प्रति आदर की भावना बढ़ाने के लिए हमें एक दूसरे के विचारों को समझना चाहिए, एक दूसरे की रीति–रिवाजों और परंपराओं को अपनाकर उनका आदर करना चाहिए। दोनों ही समुदायों के त्योहारों को मनाने का स्वतंत्र अधिकार दिया जाना चाहिए। जब दोनों समुदाय एक दूसरे के प्रति बराबरी का और उनकी स्वतंत्रता का ध्यान रखेंगे, तो ही दोनों समुदाय एक दूसरे के प्रति आदर सद्भाव बढ़ा सकेंगे।

**उत्तर 7.** लेखक का मानना है कि सच्चे लेखन की प्रेरणा बाहरी घटनाओं को देखकर जागृत नहीं होती। यह उत्कंठा मन के भीतर से उत्पन्न एक भाव से जागृत होती है। लेखक मानता है कि कई बार बाहरी तत्वों जैसे– आर्थिक विवशता, संपादक का आग्रह प्रसिद्धि पाने या बनाए रखने के लिए भी लिखा जाता है। लेकिन लेखक आंतरिक विवशताओं के कारण अपनी अनुभूति के आधार पर लिखता है।

**उत्तर 8.** मैं क्यों लिखता हूँ के प्रत्युत्तर में लेखक ने कहा कि मैं इसलिए लिखता हूँ ताकि स्वयं को जान सकूं। क्यों लिखता हूँ–लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। वास्तव में सच्चा उत्तर यही है कि लिखकर ही लेखक उस आभ्यंतर विवशता को पहचानता है जिसके कारण उसने लिखा–और लिखकर ही वह उससे मुक्त हो जाता है।

**उत्तर 9.** लेखक अपनी आंतरिक विवशता के कारण लिखने के लिए प्रेरित होता है। उसकी अनुभूति उसे लिखने के लिए प्रेरित करती है। व स्वयं को जानने के लिए भी वह लिखने के लिए प्रेरित होता है।

**उत्तर 10.** लेखन ने अनुभव की तुलना में अनुभूति को गहरी चीज इसलिए बताया है क्योंकि लेखक के हृदय के सारे भावों को बाहर निकालने में उसकी सहायता करती है। अनुभूति के कारण ही हृदय में जागृत संवेदना ही हमें लिखने के लिए मजबूर करती है।

**उत्तर 11.** कई बार लेखक का मन कुछ लिखने को नहीं होता है परंतु प्रकाशक और संपादक का आग्रह उसे लेखन के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा आर्थिक स्थिती भी लिखने की विवशता का कारण बनती हैं। तब इस स्थिती में लिखा गया साहित्य भी आंतरिक अनुभूति को जगा पाने का कारण बन जाता है।

**उत्तर 12.** प्रत्यक्ष अमुभव और अनुभूति के बीच संबंध बताते हुए लेखक ने कहा है कि अनुभव तो घटित का होता है, पर अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उसे सत्य को आत्मसात कर लेता है जो कृतिकार के साथ घटित नहीं हुआ है।

**उत्तर 13.** हिरोशिमा में जिस तरह विज्ञान का दुरुपयोग हुआ वह मानवता के इतिहास में काले दिन के रूप में दर्ज है। विज्ञान की उत्तरोत्तर प्रगति के कारण यह खतरा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। विज्ञान के आने से आज आतंकी गतिविधियाँ ज्यादा बढ़ गई है। विभिन्न देशों के पास परमाणु हथियार है जो समय- समय पर धमकियाँ देने के लिए रखे रहते हैं। भविष्य में हिरोशिमा जैसी घटनाएँ ना दोहराई जाएँ, इसके लिए सभी विभागों को एक साथ मिलकर काम करना होगा। उन देशों के साथ संबंध खत्म करने होंगे जो अपनी परमाणु शक्ति का धौंस अन्य छोटे देशों को दिखाते हैं।

**उत्तर 14.** किसी भी रचनाकार को उसकी आंतरिक विवशता रचना करने के लिए प्रेरित करती है। परंतु कई बार उसे संपादकों के दवाब व आग्रह के कारण रचना लिखने के लिए उत्साहित होना पड़ता है। कई बार प्रकाशक का तकाजा व उसकी आर्थिक विवशता भी उसे रचना, रचने के लिए उत्साहित करती है।

**उत्तर 15.** कवि ने हिरोशिमा में सब देखकर भी तत्काल कुछ नहीं लिखा, क्योंकि उस समय अनुभूति-प्रत्यक्ष की कमी थी। जब उसने सड़क पर घूमते हुए जले हुए पत्थर को झुलसा हुआ देखा। उस छाया को देखकर अवाक् इतिहास जैसे भीतर कहीं सहसा एक जलते हुए सूर्य-सा उग आया और डूब गया। उसी क्षण वह स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया। जिसके बाद हिरोशिमा पर कविता रेलगाड़ी में बैठ कर लिखी गई।

**उत्तर 16.** 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक ने अपने लिखने के कारणों के साथ-साथ एक लेखक के प्रेरणा-स्रोतों पर भी प्रकाश डाला है। लेखक के अनुसार लिखे बिना लिखने के कारणों को नहीं जाना जा सकता। वह अपनी आंतरिक व्याकुलता से मुक्ति पाने तथा तटस्थ होकर उसे देखने और पहचानने के लिए लिखता है।